ÖæÚÌèØ ßæ¾×Ø

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 13 | **जनवरी-फरवरी (संयुक्तांक)** 2012 | **अंक** 1-2

पुस्तकों का महत्त्व

भौतिकता के इस युग में पुस्तकें ही संघर्षशील मनुष्य का मार्गदर्शन करती हैं, प्रेरणा देती हैं, आत्मविश्वास जागृत करती हैं। पुस्तकों के महत्त्व को जानने का यही समय है। अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए धन-सम्पत्ति जो भी छोड़ें वे निरर्थक होंगी यदि उसके उपभोक्ता को उसके उपयोग की शिक्षा नहीं मिलेगी। इसलिए जरूरत है हर घर में एक छोटा-सा पुस्तकालय हो जहाँ पुस्तकें समय-समय पर सुख-दु:ख को बाँट सकें। मेरे पिता मुझे आठ वर्ष की अवस्था में छोड़कर सिधार गये किन्तु एक आलमारी पुस्तकें दे गये जिनसे प्रेरणा प्राप्त कर मैं पारिवारिक संघर्ष झेलता साहित्यिक क्षेत्र में आया। घर के सूनेपन को, मन के उदास क्षणों में पुस्तकें ही खुशियाँ देंगी। गाँवों में, घर-घर में गीता, रामायण आदि धार्मिक, आध्यात्मिक ग्रन्थ मिलते हैं, इसलिए कि उन्हें पढ़ने से आत्मिक शान्ति मिलती है। जीवन की विविधता, वैश्विक आवश्यकता में आज विभिन्न विषयों की पुस्तकों की आवश्यकता है जो मनोरंजन ही नहीं सामयिक समस्याओं का समाधान भी कर सकें।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

बेस्ट सेलर

जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ रही है, मैं पढ़ने योग्य किताबों के मामले में चूजी होता जा रहा हूँ। एक समय था जब मैं साहित्य के लिए नोबल, बुकर, पुलित्जर, कामनवेल्थ और विटब्रेट से पुरस्कृत लोगों की रचनाओं को अवश्य पढ़ता था। उनमें से अनेक को मैंने दूसरे दर्जे का पाया। मैंने दूसरा पैमाना अपनाया और वे किताबें पढ़नी शुरू कीं जिन पर एडवांस रॉयल्टी के रूप में लाखों डालर या पौंड मिले हों। मैंने उनमें से भी ज्यादातर को दूसरे दर्जे का पाया। फिर मैंने अमेरिका और इंग्लैंड में सबसे ज्यादा बिकनेवाली किताबों को पढ़ने की कोशिश की। उनसे तो मैं पूरी तरह निराश हो गया और मुझे आश्चर्य हुआ कि इतने लोग उन्हें पढ़ने में अपना समय क्यों गँवाते हैं? एक औसत उपन्यास पाठक के लिए अमेरिकी या अंग्रेजी के अच्छे लेखन का उदाहरण 'द रीडर डाइजेस्ट' है या फिर किसी प्रसिद्ध मीडिया पर्सनैलिटी जैसे कि विनफ्रे ओपरा से उनके बारे में कुछ सुनते हैं। ओपरा किसी उपन्यास के बारे में कोई अच्छी बात कह दे या लेखक को अपने प्रोग्राम में ले आये तो उस लेखक को भरोसा हो जाता है

शेष पृष्ठ 6 पर

सखि, वसंत आया !

बावजूद इसके कि 'नासा' के वैज्ञानिक अब 'ग्लोबल-वार्मिंग' के बजाय 'हिम-युग' के पुनरागमन का संकेत दे रहे हों, भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों में भी तापमान ऊपर-नीचे हो रहा हो, कहीं-कहीं बर्फ गिर रही हो, ठण्ड-गलन और कोहरा कायम हो फिर भी नियत समय पर सूरज ने कक्षा बदली, सूर्य उत्तरायण हुए और मकर-संक्रान्ति के साथ धूप में तल्खी आ ही गयी। खेतों में गेहूँ और धान की बालियाँ सिर उठाने लगी हैं, अरहर और सरसों के पीले फूलों से धानी हो चली है धरती की हरिद्वर्णा-चूनरी।

वासंती-पूर्वाभास के इन रोमांचक-क्षणों में स्वभावत: अपनी सारस्वत-साधना का आकलन करते हुए हम एक ओर ज्ञान-विज्ञान के नये क्षितिज खोलते सतत विकसमान वर्ग को देखते हैं तो दूसरी ओर साहित्य और संस्कृति के विभाजनकारी-क्षरण को। ज्ञान-विज्ञान की दिशा में अग्रसर वैज्ञानिक, विद्यार्थी हों अथवा वाणिज्य-क्षेत्र में कार्यरत युवा-उद्यमी अथवा छात्र हों वे इस क्षरण से उतना प्रभावित नहीं होते जितना कि दूसरे सामाजिक-विषयों से सरोकार रखने वाले लोग। इनमें छात्र-छात्राएँ हैं, अध्यापक, राजनेता, वकील हैं, लेखक-साहित्यकार, संस्कृतिकर्मी हैं। गोया कि हमारे समाज का एक बहुत बड़ा तबका अलगाववाद की क्षरणशील प्रवृत्ति से संचालित हो रहा है।

निस्सन्देह इस विघटनकारी प्रवृत्ति से ग्रस्त रहा है हमारा समाज। वर्ण-जाति की मानसिकता इस वैज्ञानिक-युग में भी कायम है। भगवद्गीता, वेदान्त-दर्शन, बौद्ध-दर्शन आदि की दार्शनिक-अवधारणाएँ इस सामाजिक विभाजन का प्रतिवाद करती आयी हैं। इसी प्रेरणा से प्रवाहित होती रही मध्यकालीन भक्ति-धारा और 19वीं सदी के पुनर्जागरण ने तो इस प्रवृत्ति का उन्मूलन ही आरम्भ कर दिया, रही-सही कसर पूरी की आज़ादी के आन्दोलन ने। आज़ादी के बाद स्वीकृत संविधान के अन्तर्गत समग्र सामाजिक-सामरस्य की अवधारणा के साथ हम आगे बढ़े, हमारे राजनेताओं ने समग्र-राष्ट्रीय-विकास की योजनाओं पर कार्यान्वयन आरम्भ किया किन्तु कुछ कदम चलने के बाद ही हम लड़खड़ाने लगे। लोकतांत्रिक-राजनीति की क्षुद्र स्वार्थपरक महत्वाकांक्षाओं ने भारतीय-समाज को पुन: वर्ण-वर्ग, जाति-धर्म-सम्प्रदाय के घटकों में धकेलकर अल्पकालिक स्वार्थ सिद्ध किये और खोने लगी हमारी दीर्घकालिक तपस्या की फलश्रुति—सामाजिक-सामरस्य की अवधारणा। परिणाम सामने है कि आज हर राजनेता चाहे वह राष्ट्रीय पार्टी का हो या क्षेत्रीय पार्टी का सभी बेशर्मी के साथ विभाजन की भाषा बोल रहे हैं। वर्ण-जाति, धर्म-सम्प्रदाय के घटकों में जनगणना हो रही है, खण्ड-खण्ड में चिह्नित की जा रही है भारतीय-नागरिकता! आखिर कौन है इस षड्यन्त्र का सूत्रधार जो तोड़ देना चाहता है अनेकता में एकता का मजबूत आधार, विलुप्त कर देना चाहता है प्राणिमात्र में स्पंदित विश्वरूप-विराट् की हमारी कालजयी संकल्पना?

दूसरी ओर भाषा और साहित्य के क्षेत्र में काफी कुछ बेहतर हो रहा है। देश की विभिन्न भाषाओं का साहित्य अपने-अपने क्षेत्र की व्यथा-कथा के साथ विकास की

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

जीवनगत विसंगतियों को रेखांकित कर रहा है। किन्तु पिछले दो दशकों के बीच साहित्य की समग्रता भी विभाजक-प्रवृत्ति से ग्रस्त हो चली है। 'दलित-विमर्श' और 'स्त्री-विमर्श' ने साहित्य की सामाजिकता के बीच एक विभाजक-रेखा खींच दी है। पिछले दौर के हों या आज के, सारे अभिजात, पुरुष रचनाकार इस अलगाववाद के बीच छँटे जा रहे हैं और खूबी यह है कि यह काम विश्वविद्यालयीय-अध्यापक-समीक्षक ही ज़्यादा कर रहे हैं। अत: आवश्यक है कि भाषा और साहित्य, शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में क्रमश: जड़ जमाती इस विघटनकारी-मनोवृत्ति को रोकने की पहल हमारे रचनाकार ही करें। वे अभिजात हों या दलित, स्त्री हों या पुरुष अपनी रचना के माध्यम से नये युग में नयी सामाजिक-समरसता के प्रतिमान स्थापित करें।

हमारे इस मनोमंथन के समानांतर दस्तक दे रही हैं **विश्व-पुस्तक-पर्व** की तारीखें। **आगामी 25 फरवरी से चार मार्च 2012** तक नेशनल-बुक-ट्रस्ट, इण्डिया द्वारा **नयी दिल्ली** के **प्रगति मैदान** में प्रति-दो-वर्ष के अन्तराल पर होने वाला '**विश्व-पुस्तक-मेला**' आयोजित किया जा रहा है। अफ्रो-एशियाई देशों के पुस्तक-प्रकाशन क्षेत्र के सर्वाधिक प्रतिष्ठित आयोजन के तौर पर स्वीकृत, समादृत यह मेला दुनिया के जाने-माने प्रकाशन-संस्थानों की भागीदारी से सम्पन्न होता आया है। इस वैश्वक-मेले में पुस्तकों के प्रोन्नयन, सह-प्रकाशन एवं अन्य प्रकाशकीय सम्बन्ध-सूत्र तलाशने के साथ-साथ साहित्यिक-सांस्कृतिक-प्रकाशकीय सम्मेलन भी आयोजित किये जायेंगे जिनके माध्यम से भारत की बौद्धिक-सम्पदा और प्रकाशन को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान देते हुए दूसरे देशों की रचनात्मकता और प्रकाशन से जोड़ने का प्रयत्न किया जायेगा। वस्तुत: यह मेला भारत के बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक प्रकाशन-उद्योग को एक मंच पर लाकर उसे शेष-विश्व से रू-ब-रू कराने में प्रमुख भूमिका का निर्वाह करता है।

इस 20वें पुस्तक मेले की पूर्व-निर्धारित विषय-वस्तु (थीम) है—'भारतीय सिनेमा पर पुस्तकों की अन्तर्राष्ट्रीय स्वत्वाधिकार प्रदर्शनी : भारतीय-सिनेमा के सौ वर्ष की ओर।' इस थीम का महत्त्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि भारतीय-सिनेमा अपने शताब्द-वर्ष की ओर अग्रसर है। अब तक भारतीय-सिनेमा के इतिहास, तकनीक, फिल्म-लेखकों, निर्देशकों, कलाकारों, संगीतकारों आदि के कार्यकलापों पर केन्द्रित काफी पुस्तकें आ चुकी हैं। इन पुस्तकों के अन्तर्राष्ट्रीय-स्वत्वाधिकार का विनियमन एक महत्त्वपूर्ण कार्य है जो इस पुस्तक-मेले में ही सम्भावित है।

पुस्तक मेले की चहल-पहल, चकाचौंध के समानांतर समवेत-स्वर में गूँजती पुस्तकों की मौन-पुकार बरबस मुझे अपनी ओर खींच रही है। उनकी पुकार सुनने की कोशिश करते हुए मैं स्टाल-दर-स्टाल किताबों के बीच से गुज़रता हूँ और अनुभव करता हूँ अपनत्व-भरा स्पर्श, उनकी गन्ध से तृप्त हो जाते हैं मन:प्राण और सुनायी देने लगती है पुस्तकों में समाहित दिव्य-चेतना की मौन-पुकार। सचमुच मौन मुखर हो उठता है, पुस्तक-मेले के आकाश में अनुगुंजित ध्वनि-तरंगें आबालवृद्ध नर-नारी का आह्वान कर रही हैं—''आओ, छुओ मुझे, पढ़ो मुझे, जानो मुझे; मुझसे ही स्पंदित हैं तुम्हारे प्राण, मेरी ऊर्जा से ही ऊर्जस्वित है तुम्हारी आत्मा!''

विश्व-भारती की वीणा पर झंकृत इस मौन-मुखर आह्वान को सुनते हुए पुस्तक-पर्व की वासंती-संक्रान्ति के बीच गा उठता है कवि-मन—

सखि, वसंत आया!
भरा हर्ष वन के मन
नवोत्कर्ष छाया!
....

सर्वेक्षण

● **जन-वंचना :** आखिर वही हुआ जिसका अनुमान था। आदरणीय अन्ना का जन-लोकपाल, सरकारी-धोखपाल बनकर सामने आया। लोकसभा की गरमा-गरम बहस के बाद रात ग्यारह बजे तक चलने वाली राज्यसभा की राजनीतिक-नौटंकी सबने देखी। भ्रष्टाचार की लड़ाई में अन्ना हताश हुए और सामान्य-जन निराश। उत्कोच (घूस/सुविधा शुल्क) का यह रोग पुराना है अत: इलाज भी लम्बा चलेगा। अन्ना-आन्दोलन से जागृत जनता शंखनाद कर चुकी है इसलिए उमीद की जा सकती है कि लगातार सरकारी-वंचना से आजिज़ जन विद्रोह करेंगे और उनका संघर्ष सार्थक होगा।

● ● **अभिव्यक्ति की आज़ादी :** इस समस्या को एक स्वनामधन्य लेखिका के बयान के सन्दर्भ में हम पहले भी रेखांकित कर चुके हैं। इस बार यह मसला मीडिया-क्रान्ति के बाद इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध गूगल, फेसबुक आदि के आपत्तिजनक, साम्प्रदायिक, अराष्ट्रीय तत्वों से उपजा है। इस सिलसिले में हमारा पड़ोसी 'चाइनीज़-ड्रैगन' तो पहले ही प्रतिबन्ध लगा चुका है। इसी क्रम में हमारे यहाँ सबसे पहले 'प्रेस कौंसिल ऑफ इण्डिया' के अध्यक्ष भू०पू० न्यायाधीश श्री मार्कण्डेय काटजू ने प्रधानमंत्री को पत्र लिख कर यह सलाह दी थी कि गैर सरकारी इलेक्ट्रॉनिक-संचार-माध्यमों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए प्रभावशाली कदम उठाये जायें। श्री काटजू की सलाह और तत्पश्चात संचार-मंत्री द्वारा कुछ कदम उठाये जाने पर मीडिया की आज़ादी को लेकर खूब बवाल मचाया गया। श्री काटजू और श्री कपिल सिब्बल को मीडिया के प्रति अपने रुख की सफाई देनी पड़ी। इसी क्रम में भारत बनाम गूगल प्लस, याहू, ट्विटर, फेसबुक जैसी सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर उपलब्ध विषयों की जाँच और आपत्तिजनक सामग्री को हटाने को लेकर कानूनी लड़ाई चल रही है। पिछले दिसम्बर में दिल्ली की एक अदालत ने 21 सोशल-नेटवर्किंग-साइट्स को 6 फरवरी तक आपत्तिजनक सामग्री हटाने का आदेश दिया है। यह हमारे लोकतंत्र का दुर्भाग्य ही है कि इस विषय पर सरकार और न्यायालय को हस्तक्षेप करना पड़े, जबकि होना यह चाहिये था कि देश के बुद्धिजीवी, पत्रकार-साहित्यकार और मीडिया

शेष पृष्ठ 4 पर

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र (शिमला)
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

जब भारतीय ऋषियों ने अथर्ववेद में **'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः'** की प्रतिष्ठा की तभी सम्पूर्ण विश्व में नारी-महिमा का उद्घोष हो गया था। ऋग्वेद के सूर्या-सोम विवाहसूक्त में भी वधू-सौभाग्य के विविध रूप बड़ी श्रद्धा के साथ रेखांकित किये गये हैं। जब पति पत्नी से कहता है कि **'गृभ्णामि त्वां सौभगत्वाय'** तो इस लघु कथन मात्र से सिद्ध हो जाता है कि सम्पूर्ण दाम्पत्य जीवन की सौख्यमंगल-कुञ्जिका नारी ही है।

चूँकि भारत के अस्सी प्रतिशत तथाकथित विद्वान् गौतमबुद्धोत्तरकालीन भारत को ही जानते-पहचानते हैं और उनमें भी प्रतिष्ठा की धुरी पर बैठे लोग, पाश्चात्य विद्वानों द्वारा अंग्रेजी में लिखे ग्रन्थों से ही, भारत का अनुभव एवं मूल्यांकन करते हैं, अतः नारी विषयक आर्ष-अवधारणा तक वे पहुँच ही नहीं पाते। उन्हें केवल वह नारी दिखाई पड़ती है जिसे **देवदासी** बनने को बाध्य किया जाता था, जो **नगरवधू** बनती थी अथवा **विषकन्या** के रूप में प्रयुक्त की जाती थी।

महिमामयी नारी के इन संकीर्ण रूपों का अपलाप तो नहीं किया जा सकता। परन्तु हमें यह समझना चाहिये कि वे नारी के संकटकालीन रूप थे, शाश्वत नहीं। हमें यह भी स्वीकार करना चाहिये कि रोमन साम्राज्य में अथवा अन्यान्य प्राचीन संस्कृतियों में नारी की जो अवमानना, दुर्दशा एवं लांछना हुई है—जिसके प्रामाणिक दस्तावेज उपलब्ध हैं, वैसा भारतवर्ष में कम से कम, मालवेश्वर भोजदेव के शासन काल तक कभी नहीं हुआ।

तुर्क आक्रमणों के अनन्तर भारत का सारा परिदृश्य ही बदल गया। आक्रान्ताओं का कोई धर्म नहीं होता, न ही उनकी कोई नैतिकता होती है। फिर तो उन बर्बर आक्रान्ताओं की क्या बात की जाय जो पशुवत् जीवन जी रहे हों। जो मात्र धन लूटने एवं अपनी काम की भूख मिटाने के उद्देश्य से आक्रमण कर रहे हों। उन उनकी कोई नीतिनियामक **स्मृति** थी, न ही **धर्मशास्त्र** था। उनकी कोई उदात्त सामाजिक परम्परा भी नहीं थी। ऐसे आक्रान्ता भारत में भी वही सब करते रहे जो एक नरपशु को करना चाहिये था। उनके दण्ड भी अमानवीय तथा बर्बर होते थे। जीवित चमड़ी उखड़वा लेना, कत्ले आम घोषित कर देना, आँख में नींबू निचोड़वा देना या तलवार की नोंक से दोनों आँखें बाहर निकलवा लेना आदि आदि। यह सब क्या है? राक्षस-व्यवहार ही तो है। परन्तु तुर्क आक्रान्ताओं ने भारतीय नरपतियों अथवा बन्दियों के साथ ऐसे ही लोमहर्षक अत्याचार किये।

मलिक क़ाफूर, अलाउद्दीन तथा औरंगजेब—सरीखे आततायियों ने तो मनुष्यता की परिभाषा को ही झुठला दिया। कामरान, दाराशिकोह तथा मुराद का जैसा करुण अन्त कराया उनके भाइयों ने, उसे जान-सुन कर ही कलेजा काँप उठता है। सल्तनत-काल के इसी नैतिकता-विहीन वातावरण में नारियों के साथ भी अपरिमित अत्याचार हुए। संरक्षक-विहीन नारी का अस्तित्व ही क्या? उसके पास **विजेता की भोग्या** बन जाने अथवा आत्मघात कर लेने के अतिरिक्त और उपाय ही क्या था? राजा दाहिर की कन्याओं जैसी न सबकी प्रतिभा होती थी, न ही स्वाभिमान। फलतः असहाय नारियाँ अगत्या भोग्या बनती रहीं।

आज की भारतीय नारियों के चरितनिर्माण में तथा उनकी मानसिकता में, लगभग बारह सौ वर्षों की यह संस्कार-मर्यादा-विहीन पराधीनता भी शामिल है। आज की भारतीय नारी कम से कम तीन—भारतीय (वैदिक) इस्लाम तथा मसीही—संस्कृतियों का समन्वित रूप है। उसके चरित, आचार-विचार, जीवनदृष्टि, शील-व्यवहार, वेषभूषा, खान-पान तथा मनोविज्ञान में इन तीनों विसंवादी संस्कृतियों का **समवाय** है। यदि **संयोग** मात्र होता तिलतण्डुल की तरह तो आज की नारी को अलग करके देखा जा सकता था। क्योंकि संयोग में संयुक्त वस्तुओं का पृथक् अस्तित्व अक्षुण्ण बना रहता है। परन्तु 'समवाय' में तो सारी भिन्न इकाइयाँ मिलकर एक (अन्य रूप) हो जाती हैं। यदि आप वस्त्र से ताने-बाने (तन्तुओं) को अलग करना चाहें तो 'वस्त्र' का स्वरूप ही नष्ट हो जायेगा।

कोई कह सकता है कि आज की भारतीय नारी भी तो पृथक् रूपों में ही दिखाई पड़ती है—हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आदि। अतः वे भी पृथक् ही हैं। परन्तु ऐसा नहीं है। आज की भारतीय नारी को आप मन्दिर, मस्जिद एवं गिर्जाघर के आधार पर भले ही पृथक् मान लें परन्तु यह आप कैसे कह सकते हैं कि सबका शील-व्यवहार भी पृथक् होता है, जीवनदृष्टि पृथक् होती है, चरित एवं मनोविज्ञान पृथक् होता है?

आज की नारी किसी धर्म की अनुयायिनी क्यों न हो, वह अपने पति पर एकाधिकार ही चाहेगी। पति का व्यभिचार, परनारी-सम्पर्क अथवा बहुपत्नीत्व किसी को भी अभिप्रेत अथवा सह्य नहीं होता। सन्ततिप्रेम सबका समान होता है। शील-व्यवहार विषयक जीवन दृष्टि भी सबकी समान ही होती है। इसीलिए आज की भारतीय नारी को, धर्म या सम्प्रदाय के अनुसार, अलग करके कथमपि देखा नहीं जा सकता। विशेषतः आज इक्कीसवीं शती के दूसरे दशक में, जबकि अधिकांश भारतीय कन्याओं के अन्तर्मन में यूरोपीय सभ्यता, संस्कृति एवं मानसिकता प्रतिष्ठित हो चली है वह एक **प्रश्लिष्ट** (कॉम्प्लेक्स) की मूर्ति बन गई है।

आज स्थिति यह है कि कान्वेन्ट में शिक्षा प्राप्त करने वाली कन्या को सोमवार, मंगलवार का न नाम स्मरण है, न ही क्रम। पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाली लड़कियाँ (लड़के भी) शौकियन गले में झाँस पहनने लगी हैं। यहाँ तक कि मन ही मन उन्हें अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति घटिया अथवा दोयम दर्जे की प्रतीत होने लगी है। दिल्ली से शिमला आते-जाते समय देखता हूँ इन विचित्र बालाओं को। बड़ी निर्भयता से आधे नितम्ब तक का जीन्स पैण्ट और यथा कथञ्चित् (नीचे खींच कर छुआ देने पर) पैण्ट का कादाचित्क स्पर्श करने वाली एक बनियान पहने, स्वेटर को कमर में बाँधे, बैग कन्धे पर टाँगे तथा एक मोटा-सा अंग्रेजी उपन्यास हाथ में लिये हमारी ललनायें यात्रा करती रहती हैं। इस निर्भय, एकाकी यात्रा पर मेरी कोई टिप्पणी नहीं। यह तो अच्छी बात है। शिक्षित कन्यायें साहसी तथा आत्मविश्वास-युक्त होंगी ही। वे गँवार तो हैं नहीं कि छुई-मुई बनी रहें, या किसी की फटी आँखे देख सहम जाँय। परन्तु दुःख तब होता है जब बैठते समय अथवा ट्रेन की ऊपरी बर्थ पर चढ़ते समय उनकी बनियान और पैण्ट, लंका और भारत की तरह अलग हो जाते हैं। एक नीचे उतर आता है। क्योंकि उसकी नाप ही ऐसी है। दूसरा ऊपर चढ़ने को बाध्य है क्योंकि वह कन्धे में अटका हुआ है। और तब? मैंने देखा कि नौजवान हो या बूढ़ा, किसी की भी दृष्टि आँखों के गोलों में नहीं रहती। सबके सब लंका और भारत के बीच का समुद्र ही देखने लगते हैं।

एक घटना याद आती है। साहित्य अकादमी ने सन् 1970-75 के बीच चण्डीगढ़ में एक कार्यशाला आयोजित की, समस्त मानित भाषाओं के रचनाकारों की। एक शाम राज्यपालजी ने अपने आवास पर सबको भोजनार्थ निमन्त्रित किया। भोजन से पूर्व राज्यपाल महोदय प्रत्येक रचनाकार को अंगवस्त्रम् तथा प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित कर रहे थे। कई रचनाकार सम्मान ले चुके। तभी एक विश्वविद्यालय से पधारी अंग्रेजी प्राध्यापिका का क्रम आ गया। वह चुस्त जीन्स एवं ऊँची हील के सैण्डल पहने, भाषानुकूल विलासिता के साथ, असन्तुलित पाँव आगे बढ़ीं। मञ्च पर चढ़ने के लिये तीन सीढ़ियाँ थीं जो ज्यादा ऊँची तो नहीं थीं। तथापि रमणी-रत्न का चुस्त-दुरुस्त जीन्स पैण्ट, अपनी फिटिंग एवं सिलाई के कारण, पैरों को इच्छानुसार खुलने नहीं दे रहा था। समतल फर्श पर तो देवीजी, नन्हें डग

भरती आराम से चलीं परन्तु जैसे ही उन्होंने पाँव उठा कर सीढ़ी पर रखना चाहा, धड़ाम से नितम्ब के बल पीछे आ गिरीं। सिहंगढ़-दुर्ग पर फेंकी गई ताना जी मालसुरे के कमन्द जैसी उनकी एड़ी, चढ़ने के बजाय नीचे भहरा पड़ी।

अचानक श्रृंगार में पहले तो भयानक रस फूटा, फिर बीभत्स और अन्ततः करुण। कई लोग दौड़े उठाने के लिए। स्वयं राज्यपाल महोदय कुर्सी छोड़ मञ्च की कोर तक गये सहानुभूति में। परन्तु अद्भुत वीरांगना थीं प्राध्यापिका जी। खड़े होने का प्रयास करते-करते भी बस एक ही वाक्य दुहराती रहीं—इट डजण्ट मैटर, इट डजण्ट मैटर....। परन्तु इस घटना में सर्वोपरि था **हास्यरस** जो शिवशंकर के कालकूट की तरह लोगों के कण्ठ में अटका पड़ा था।

कभी-कभी मैं सोचने लगता हूँ कि इन कन्याओं के माता-पिता तो अंग्रेज हैं नहीं! वे तो भारत की माटी में ही पैदा हुए हैं! अधिक से अधिक यही हो सकता है कि वे गाँव में न रह रहे हों, शहरी हों। उनमें शान-शौकत अधिक हो सकती है। खुलापन भी उनमें हो सकता है। परन्तु यह कैसे सम्भव हो जाता है कि यौवनभार से गर्वित अपनी कन्या का यह अर्धनग्न रूप उन्हें भाने लगता है? युवतियों को भी यह मिथ्या भ्रम क्यों है उनका यह 'आधुनिका' का रूप दर्शकों में उनके प्रति आदर, सम्मान का भाव पैदा करता है? यदि वे गले पर एक दुपट्टा भी डाले रहें तो भी संकुचित मनोवृत्ति वाली, रूढ़ एवं परम्परावादी नहीं बन जायेंगी। परन्तु उनके प्रति दर्शकों के मन में पिता, भाई अथवा आत्मीय का भाव अवश्य पैदा होगा।

पाश्चात्य देशों की नग्नता, उनके अपने देश में या अपने समाज में 'नग्नता' कत्तई नहीं है। वह उनकी सभ्यता-संस्कृति अथवा रहन-सहन का अंश है। उतनी नग्नता से वहाँ न तो कोई विकार पैदा होता है न ही दृष्टि बदलती है। परन्तु भारतीय समाज में, जहाँ गाँव के परिवेश में आज की बूढ़ी औरत जेठ से परदा करती है, वधू बड़ों के सामने घूँघट में रहती है, इतनी भी नग्नता अनर्थ का कारण बन जाती है। स्वयं युवतियाँ भी देखती हैं कि देखने वालों की (चोर या) प्रत्यक्ष दृष्टि उन्हीं पर टिकी है। परन्तु यह देख कर भी यदि उन्हें अपने **'जगद्विजय'** का गर्व होता हो तो क्या कहा जा सकता है?

अभी पिछले महीने की बात है। बस में यात्रा कर रहा था। बगल वाली सीट पर एक युवक था। एक स्टॉप पर बस रुकी तो एक वृद्ध महिला अपने बेटे और नातिन के साथ चढ़ी। कण्डक्टर ने युवक से कहा माताजी को बैठाने के लिये क्यों कि वह कण्डक्टर की ही सीट थी। युवक विनम्रतापूर्वक खिड़की की ओर खिसक गया। माताजी बैठ गईं आराम से। परन्तु बैठते ही अपनी नारी-सुलभ चतुराई दिखाने लगीं। पहले तो वह स्थान बदल कर खिड़की की ओर गईं और बाद में युवती नातिन को भी बैठने के लिए बाध्य करने लगीं। जो कि उदारमना युवती ने कहा भी 'दादी! जगह नहीं है, आप बैठी रहो।'

परन्तु माया और आसक्ति में डूबी दादी जी अपनी धुन की पक्की थीं—'आ जा, आ जा। जगह हो जायेगी।' उनकी इस तोतारटन्त से उद्विग्न युवक स्वयं उठ कर खड़ा हो गया और दादीजी ने बड़े आराम से अपनी नातिन को बगल में बैठा लिया। इस संस्मरण का घिनौना अन्त यह था कि अब दादी जी ने **बेटे को** बैठ जाने के लिये बुलाना शुरू कर दिया। तभी मेरी आँखे निरुपाय खड़े युवक की आँखों से मिलीं। हम दोनों ही विस्मय मुद्रा में मुस्काने लगे।

महिलायें इतनी आत्मनिष्ठ एवं स्वार्थान्ध क्यों बन जाती हैं? अपनी नातिन और बेटे के बैठने की इतनी चिन्ता कि बैठे युवक को खड़ा कर दिया? उनको कोई शर्म नहीं थी कि यह भला आदमी उनकी नातिन के लिए खड़ा हो गया है तो बेटे को बैठाने के बजाय उसी को बैठे रहने के लिए कहें!

बहनों से भी मैं पूछना चाहूँगा कि महिषकल्प पतिदेव को बगल में खड़ा कर आप टिकट क्यों निकालती हैं? आप अकेली जाँय टिकट लेने, कोई हर्ज नहीं। आप जैसी अनेक बहनें टिकट ले रही होती हैं। कहीं-कहीं तो स्त्री-पुरुष की समानान्तर लाइन रहती है। नहीं भी रहती तो बाबू स्त्री-पुरुष के क्रम से ही टिकट देता है।

परन्तु रेलवे स्टेशन/बस स्टैण्ड की भारी भीड़ में पतिदेव जी चोबदार की तरह बगल में खड़े हों **निष्क्रिय**, बीच-बीच में एकाध बार बात कर लोगों को अपने 'पति' होने का एहसास मात्र करा रहे हों तो आपको कैसा लगेगा? आपके अगल-बगल खड़ी भीड़ ने भी अपना हाथ खिड़की में डाल रखा है तब क्या आपके स्वामी जी को आपकी दुर्गति का बोध नहीं होता है? आप क्यों तैयार हो जाती हैं ऐसी सस्ती सुविधाओं के लिए? क्या आपको, अपने सुविधाभोगी पति पर हँसती लोगों की आँखें नहीं दिखाई पड़तीं? आज टिकट के लिए उपयोग कर रहे हैं, कल अपनी पद-प्रतिष्ठा के लिए उपयोग करने लगें तो आप क्या करेंगी? ऐसा भी नहीं है कि समाज में यह सब न होता हो! कभी-कभी तो ऐसे लज्जास्पद सन्दर्भों में पति-पत्नी—दोनों आश्चर्यजनक ढंग से एकमत होते हैं। राजस्थान की बहुचर्चित भँवरीदेवी को भी यही रोग था, जो उनको ही ले बीता।

तो मेरी समर्च्य माताओं! आदरणीय बहनों तथा प्रिय बेटियों! अपने स्वाभिमान, अपनी शास्त्रसम्मत प्रतिष्ठा एवं अपनी मर्यादा की रक्षा करो। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः! भगवान् मनु ने तो आपको पूजावस्तु माना, आपको देववन्द्य माना। परन्तु आप अपने को क्या मान रही हैं? यह आपके सोचने का विषय है। यदि बालीवुड की नग्नता ही आपका जीवनादर्श है तो फिर मुझे कुछ नहीं कहना है।

पृष्ठ 1 का शेष

के लोग मिलकर राष्ट्रीय-नैतिकता, सामाजिक-आचार-संहिता और अपने उच्च-आदर्शों की दृष्टि से अभिव्यक्ति की इस तथाकथित आज़ादी का सीमांकन करते। अस्तु, अब तो पक्ष-विपक्ष न्यायालय में हैं जिसका निर्णय सर्वमान्य होगा।

● ● ● नाचे उस पर श्यामा : संयोग की बात है कि यह वर्ष आधुनिक भारतीय चेतना के महानायक स्वामी विवेकानन्द के जन्म का 150वाँ वर्ष है। आज भी हमें याद है 1893 में शिकागो में आयोजित विश्व-धर्म-सम्मेलन का वह क्षण जब एक गुलाम देश के निहत्थे नौजवान ने प्रभुतासम्पन्न गौरांग-जाति की अहमन्यता को चुनौती दी थी और दुनिया के सामने भारतीय गुलामों का सिर ऊँचा किया था। व्यावहारिक वेदान्त के इस तप:साधक नौजवान ने राष्ट्र की सुप्त-चेतना को जागृत करते हुए कहा—'उठो-जागो' और उसका आकुल कवि-हृदय गा उठा—

चूर-चूर हो स्वार्थ, साध सब
मान, हृदय हो महाश्मशान
नाचे उस पर श्यामा, घन रण
में लेकर निज भीम कृपाण!

—परागकुमार मोदी

अध्येताओं, पुस्तकालयों, छात्रों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

ÌèÙ ãÁ#Ù ß» È¤Å × çßà##Ü à##M¤×

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी – 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com **&** sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

रूस में भगवद्गीता पर नहीं लगेगा प्रतिबंध

रूस में रहने वाले हिन्दुओं ने 28-12-11 को एक बड़ी कानूनी लड़ाई जीत ली। रूसी प्रान्त साइबेरिया के शहर टोम्स्क की एक अदालत ने हिन्दू धर्मग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता के रूसी संस्करण को प्रतिबंधित करने की माँग करने वाली याचिका खारिज कर दी। अदालत के इस फैसले से रूस सहित दुनिया भर के हिन्दुओं में हर्ष की लहर दौड़ गई है। विदेश मंत्री ने इस मुद्दे पर समर्थन देने के लिए रूस की सरकार को धन्यवाद दिया।

रुश्दी के एक और उपन्यास पर बनेगी फिल्म

विवादों के चलते सुर्खियों में रहने वाले प्रख्यात लेखक सलमान रुश्दी के नौवें उपन्यास 'दि एंचाट्रेस ऑफ फ्लोरेंस' पर फिल्म बनाने की तैयारी चल रही है। इस उपन्यास के कथानक की आधी पृष्ठभूमि फतेहपुर सीकरी और मुगल शासनकाल से जुड़ी है। इसकी शूटिंग ताजनगरी में भी होने की सम्भावना है।

'हिंग्लिश' : सरकारी दाँव

सरकारी कार्यालयों में कामकाज के लिए कठिन हिन्दी शब्दों की जगह प्रचलित अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करने की सरकार ने अनुमति दे दी है। गृह मंत्रालय की राज्य भाषा इकाई ने हाल ही में विभिन्न सरकारी कार्यालयों को इस सम्बन्ध में सर्कुलर जारी किया है। इसमें स्पष्ट कहा गया है कि विशुद्ध हिन्दी के इस्तेमाल से आम जनता को दिक्कतें पेश आती हैं।

सर्कुलर में लोकप्रिय हिन्दी शब्दों और वैकल्पिक अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करने की वकालत की गयी है। उदाहरण के लिए 'मिसिल' की जगह 'फाइल', 'प्रतिभूति' के स्थान पर 'गारंटी', 'कुंजीपटल' की जगह 'की-बोर्ड' और 'संगणक' के स्थान पर 'कम्प्यूटर' का प्रयोग करें।

अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करने की प्रक्रिया में भी तत्काल बदलाव लाने की जरूरत है। साथ ही कहा गया है कि अनुवाद शाब्दिक नहीं होना चाहिये। आधिकारिक पत्राचार में उर्दू, अंग्रेजी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के लोकप्रिय शब्दों के इस्तेमाल को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये। हिन्दी के शुद्ध शब्द साहित्यिक उद्देश्यों के लिए होने चाहिये जबकि काम के लिए व्यावहारिक 'हिंग्लिश' शब्दों का इस्तेमाल होना चाहिये।

आत्मकथा लेखन का क्रेज़

इन दिनों सुष्मिता सेन, दीप्ति नवल और राखी गुलजार अपनी आत्मकथा लिखने में व्यस्त हैं।

सूत्रों के मुताबिक, 'पूर्व मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन को लिखना बहुत पसन्द है। वह अपने जज्बातों, भावनाओं और अनुभूतियों को बहुत ही खूबसूरती से कागज पर उतारना जानती हैं। वे एक अच्छी कवियित्री भी हैं। फिलहाल वह अपनी आत्मकथा लिखने में व्यस्त हैं। इसमें उनके जीवन में 35 साल के उतार-चढ़ावों का जिक्र होगा।' एकांतप्रिय राखी गुलजार भी अपनी जिन्दगी को कागजों पर उतारने में लगी हैं। वहीं दीप्ति नवल ने अपनी आत्मकथा लगभग पूरी कर ली है। उन्होंने बताया, 'इसमें अभिनेत्री और महिला के तौर पर मेरी जिन्दगी का वर्णन मिलेगा।'

90 लाख रुपये में नीलाम हुई टैगोर की नोटबुक

न्यूयॉर्क में नोबेल विजेता और कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की एक नोट बुक एक लाख 70 हजार 500 डॉलर (करीब 90 लाख रुपये) में नीलाम हुई। नीलामी घर सूथबी ने इसकी पुष्टि की। 1928 की इस नोट बुक में टैगोर की 12 कविताएँ और बंगाली भाषा में इतने ही गीत लिखे हैं। 152 पृष्ठ की यह नोटबुक टैगोर ने अपने एक पारिवारिक मित्र को भेंट की थी। इसकी नीलामी उन्हीं के उत्तराधिकारी ने करायी।

एलए टाइम्स का भारतीय सम्पादक

भारतीय मूल के अमेरिकी पत्रकार दवन महाराज को लॉस एंजिलिस (एलए) टाइम्स अखबार का नया सम्पादक बनाया गया है। वह रस स्टैनटन का स्थान लेंगे। 49 वर्षीय महाराज अखबार के 15वें सम्पादक हैं। महाराज का जन्म त्रिनिदाद में हुआ था। वह इस अखबार में 22 साल से काम कर रहे हैं।

मोंटेक माँगें मेडिकल शिक्षा में एफडीआई

नई दिल्ली। खुदरा क्षेत्र में विदेशी निवेश को केन्द्र की मंजूरी ने पूरे देश में बवाल मचा रखा है। ऐसे में योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया ने कहा कि मेरा मानना है कि चिकित्सा शिक्षा क्षेत्र को निजी क्षेत्र के निवेशकों के लिए खोला जाना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जहाँ भी निजी निवेश की इजाजत है वहाँ विदेशी निवेश में मुझे कोई समस्या नजर नहीं आती। उन्होंने कहा कि देश के मेडिकल संस्थानों की वर्तमान क्षमता यह नहीं है कि वह अगले कुछ वर्षों में पाँच लाख डॉक्टर दे सकें, जबकि यह समय की जरूरत है।

डॉ० मनमोहन सिंह छात्रवृत्ति

लंदन स्थित कैंब्रिज विश्वविद्यालय के सेंट जॉन कॉलेज ने इस वर्ष के डॉ० मनमोहन सिंह छात्रवृत्ति की घोषणा की है। वर्ष 2007 में इस छात्रवृत्ति की शुरुआत की गयी थी। छात्रवृत्ति के तौर पर तीन छात्रों को वर्ष 2012-13 से अगले तीन वर्षों तक 35 हजार पौंड (करीब 28 लाख रुपये) देने का प्रावधान है। केवल भारतीय छात्रों को दी जाने वाली यह छात्रवृत्ति विज्ञान, तकनीक, अर्थशास्त्र और सामाजिक विज्ञान में पीएचडी और एम फिल की पढ़ाई के लिए दी जाती है। भारत के प्रधानमंत्री सिंह ने इसी कॉलेज से पिछली सदी के पाँचवे दशक में पढ़ाई की थी।

गांगुली ने शुरू की नई पारी

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने खेल पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रखकर अपने करियर में नयी पारी की शुरुआत की। 2 दिसम्बर को गांगुली को विजडन इंडिया के सम्पादकीय बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया। विजडन इंडिया जनवरी से डिजिटल और प्रकाशन सहित कई रूपों में अपनी उपस्थिति दर्ज करायेगा। भारत में इसकी शुरुआत फिदेलिस वल्वर्ड ने की जिसके कार्यकारी अध्यक्ष आनन्द कृष्णन ने गांगुली को सम्पादकीय बोर्ड का अध्यक्ष बनाने की घोषणा की। मशहूर क्रिकेट लेखक दिलीप रामचंद्रन को इसका मुख्य सम्पादक बनाया गया है।

और होठों से लिख डाला उपन्यास

अगर किसी में कुछ कर गुजरने की ललक हो, तो किसी भी प्रकार की शारीरिक अक्षमता उसके रास्ते का रोड़ा नहीं बन सकती। चीन के जियांग्शू प्रांत की इस किशोरी की कहानी तो कम से कम यही बयां करती है। मस्तिष्क पक्षाघात से पीड़ित 19 साल की वैंग क्विनजिन (चीन) ने 3.6 लाख शब्दों का एक उपन्यास अपने होठों से लिख डाला। इस बीमारी की वजह से गर्दन के नीचे इनका पूरा शरीर सुन्न पड़ चुका है। अपने होठ से टाइप करने वाली वैंग के उपन्यास को इंटरनेट पर जबरदस्त समर्थन मिल रहा है। 'ओवरवियरिंग प्रिंस ऑफ अ प्राउड प्रिसेंज' शीर्षक वाले उपन्यास का पहला खण्ड यह लिख चुकी है। दूसरे खण्ड को पूरा करने में लगी हैं।

विष्णु प्रभाकर मार्ग

दिल्ली की शकूर बस्ती वार्ड के अन्तर्गत स्थित गुरु हरकिशन मार्ग एवं संत कबीरदास मार्ग को जोड़ने वाले मार्ग का नामकरण विष्णु प्रभाकर के नाम से पिछले दिनों एक समारोह में किया गया। विष्णु जी ने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष यहीं बिताए थे। यह नामकरण सुप्रसिद्ध हास्य कवि सुरेन्द्र शर्मा के प्रयासों का सुफल है।

फ्रांसीसी भाषा में भी पढ़ी जा सकेगी रामायण

भारतीय साहित्य की विश्वप्रसिद्ध रचना रामायण, फ्रांसीसी भाषा में प्रकाशित की गयी है। लेखिका, सम्पादक और प्रकाशक डाएने दे सेलीयर्स ने 10 सालों से भी अधिक समय की मेहनत के बाद वाल्मीकि रामायण के फ्रांसीसी संस्करण की रचना की है। सात किताबों के इस

संग्रह में 16वीं से 19वीं सदी के दौरान रामायण से जुड़े लघुचित्रों को भी शामिल किया गया है। इसकी कीमत 58,000 रुपये है।

'लॉर्ड ऑफ द फ्लाइज' की पांडुलिपि

ऑक्सफोर्ड (लंदन) के बोडलियन पुस्तकालय में पहली बार नोबेल पुरस्कार विजेता विलियम गोल्डिंग की क्लासिक रचना 'लॉर्ड ऑफ द फ्लाइज' की मूल पांडुलिपि का प्रदर्शन किया जा रहा है।

ज्ञात हो कि इस उपन्यास का शीर्षक पहले 'स्ट्रेंजर्स फ्रॉम विदिन' था और इसे कम से कम दस प्रकाशकों ने खारिज कर दिया। अन्तत: फैबर एण्ड फैबर ने इसे प्रकाशित किया और यह कालजयी उपन्यास सिद्ध हुआ। 23 दिसम्बर, 2011 को गोल्डिंग की सौवीं जयन्ती के अवसर पर विलियम गोल्डिंग एस्टेट से माँगकर इस पांण्डुलिपि को प्रदर्शित किया जा रहा है।

राजस्थान की अकादेमियों के अध्यक्ष

राजस्थान की सरकार के निर्णय के अनुसार राज्य के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने चारों अकादेमियों में नए अध्यक्षों की नियुक्ति की। एक प्रकाशित समाचार के अनुसार राजस्थान साहित्य अकादेमी में वेद व्यास, राजस्थानी भाषा साहित्य और संस्कृति अकादेमी में श्याम महर्षि, उर्दू अकादेमी में हबीबुर्रहमान और संस्कृत अकादेमी में सुषमा सिंघवी को अध्यक्ष बनाया गया है।

हिन्दी विश्वविद्यालय दिनकर के गाँव में

एक समाचार के अनुसार मानव संसाधन विभाग ने बिहार में तीन नये विश्वविद्यालयों की स्थापना के सम्बन्ध में प्रस्ताव तैयार किया था जिसे मंत्री स्तर पर मंजूरी मिल गई है।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी नए विश्वविद्यालयों पर सैद्धान्तिक सहमति व्यक्त कर दी है। हिन्दी विश्वविद्यालय के लिए राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का पैतृक गाँव चुना गया है। बेगूसराय के पास सिमरिया गाँव में इस विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए विभाग ने स्थल-चयन की प्रक्रिया शुरू की है।

जर्मन प्रकाशक ने छापी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की छात्रा की किताबें

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की छात्रा ने विदेशी प्रकाशन जगत में जगह बनाते हुए अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है।

जर्मनी के प्रसिद्ध प्रकाशन संस्थान लैंबर्ट एकेडमिक पब्लिशिंग ने पिछले नवम्बर में पूर्व मध्य रेलवे, मुगलसराय में डिप्टी सीआईटी पद पर कार्यरत तनवीर हबीब की बेटी हुमा की दो पुस्तकें *हाऊ टू बीकम रिच* और *वूमन इंट्रप्रिन्योरशिप* प्रकाशित कीं। इन पुस्तकों में दुनिया की शीर्ष महिला उद्यमियों के परिचय, संघर्ष प्रस्तुत किये गये हैं।

स्मृति-शेष

नहीं रहे जनकवि अदम गोंडवी

'काजू भुने प्लेट में, ह्विस्की गिलास में/उतरा है रामराज, विधयाक निवास में', 'जो उलझ कर रह गई है फाइलों के जाल में / गांव तक वह रोशनी आएगी कितने साल में', 'देखना सुनना व सच कहना जिन्हें भाता नहीं / कुर्सियों पर फिर वही बापू के बन्दर आ गए...।' राजनीति और राजनेताओं को बेनकाब करते ये शेर हैं हिन्दी के जनकवि रामनाथ सिंह उर्फ अदम गोंडवी के। अदम गोंडवी का विगत 18 दिसम्बर को लखनऊ में निधन हो गया। वह 65 वर्ष के थे।

किसान परिवार में 22 अक्टूबर 1947 को जन्मे अदम गोंडवी, दुष्यंत कुमार के बाद हिन्दी गजल के सबसे महत्त्वपूर्ण नाम थे। उन्होंने हमेशा समाज के दबे कुचले एवं कमजोर वर्ग के लोगों की आवाज को मुखर किया। 'धरती की सतह पर' और 'समय से मुठभेड़' उनके गजल संग्रह हैं। 1998 में उन्हें मध्य प्रदेश सरकार ने दुष्यंत कुमार पुरस्कार से सम्मानित किया था।

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् पण्डित पुरुषोत्तम त्रिपाठी का निधन

पिछले दिनों ठण्ड से बचने के लिए कमरे में जला कर रखी गई अंगीठी ने संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् व राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित पं० पुरुषोत्तम त्रिपाठी की जान ले ली। इतना ही नहीं, इस अंगीठी से निकले धुएँ के चलते दम घुटने से उनकी पत्नी पुष्पा की भी मौत हो गई।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में सम्मानित आचार्य के पद पर कार्यरत श्री त्रिपाठी (85 वर्ष) मीरघाट स्थित उदासीन संस्कृत विद्यालय के प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त थे। उन्हें इसी साल मई में व्याकरण में उत्कृष्ट कार्य के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

नहीं रहीं देश की पहली महिला फोटो पत्रकार व्यारवाला

देश की पहली महिला फोटो पत्रकार होमी व्यारवाला का विगत 15 जनवरी को बड़ौदा में निधन हो गया। वह 98 वर्ष की थीं।

उन्होंने 15 अगस्त, 1947 को लाल किले पर ध्वजारोहण समारोह की फोटो खींची थीं। व्यारवाला को जनवरी, 2011 में पद्म विभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

मुन्नू प्रसाद पाण्डेय का निधन

वरिष्ठ पत्रकार व सिने साप्ताहिक रम्भा के सम्पादक मुन्नू प्रसाद पाण्डेय (81 वर्ष) का उनके वाराणसी स्थित आवास पर विगत 27 दिसम्बर को निधन हो गया। श्री पाण्डेय 60 वर्षों तक पत्रकारिता व समाज सेवा से जुड़े रहे। इस दौरान उन्होंने फिल्म पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। उन्होंने 19 वर्ष पहले रामनवमी के दिन राजेन्द्र प्रसाद घाट पर राममय रात का शुभारम्भ किया था, जिसका सिलसिला अबाध जारी है।

गीतकार श्री भारत भूषण नहीं रहे

हिन्दी गीत में छंद और लय के जादूगर 82 वर्षीय कवि-गीतकार श्री भारत भूषणजी का दिल का दौरा पड़ने से विगत 17 दिसम्बर को निधन हो गया। उनका जन्म 9 जुलाई, 1929 को हुआ। वे मेरठ कॉलेज में शिक्षक रहे। 'बन-फूल', 'पाप', 'राम की जल समाधि' आदि उनकी लोकप्रिय कविताएँ हैं।

श्री नारायण विश्वनाथ सप्रे का निधन

काशी की साहित्यिक गतिविधियों को विशेष दिशा देने वाले साहित्यकार, अनुवादक एवं रचनाकार श्री नारायण विश्वनाथ सप्रे जी का विगत 16 दिसम्बर को निधन हो गया। वे 82 वर्ष के थे। वर्षों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की सेवा करने के उपरान्त आप परीक्षा विभाग के सहायक कुलसचिव पद से सेवानिवृत्त हुए थे। आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की जिनमें प्रमुख हैं— तुकाराम गाथा, श्रीमद्एकनाथी भागवत, महाराष्ट्र के कर्मयोगी, महाराष्ट्र के संत-महात्मा, स्वर्ग का उल्लू आदि।

डॉ० ऋषिनारायण पावन नहीं रहे

विगत 15 दिसम्बर को हिन्दी जगत के विद्वान डॉ० ऋषिनारायण पावन का 75 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। डॉ० पावन हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र 'भोरवाणी' के प्रधान सम्पादक थे। चेतसिंह शोध संस्थान की स्थापना भी उन्हीं के द्वारा की गयी थी।

सिराज मिर्जा का निधन

प्रसिद्ध पत्रकार व समाजसेवी 81 वर्षीय श्री सिराज मिर्जा का निधन विगत 6 जनवरी को हो गया। 'सण्डे मैग्जीन' में छपे उनके लेख अत्यन्त ही लोकप्रिय हुए थे। वे न केवल अच्छा लिखते थे बल्कि अच्छा बोलते भी थे।

ÒÖ±ÚÌèØ ß±¾×ØÓ ÂçÚß±Ú ·¤è ¥±Ú â ç΃ß»Ì
¥±^×±¥± ·¤± Ö±ßÖèÙè Ÿ±h±ÁçÜ

पृष्ठ 1 का शेष

कि वह अपना शेष जीवन बड़ी आरामदायक स्थिति में बितायेगा। मैंने काफी अरसे तक ऐसी किताबों को पढ़ना झेला है।

यदि आप वास्तव में श्रेष्ठ पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं तो इस पर न जायें कि उनकी बिक्री कैसी हो रही है और इससे पहले कि आप दोस्तों की राय मानें, श्रेष्ठ लेखक का मूल्यांकन करने की उनकी योग्यता की जाँच भी कर लें। **—खुशवंत सिंह**

ßÕâ±§Å Ñ www.vvpbooks.com

20 वाँ, नई दिल्ली

❑ (शनिवार, 25 फरवरी से रविवार, 4 मार्च 2012) ❑

विश्व पुस्तक मेला

प्रगति मैदान, नई दिल्ली

पुस्तकों के इस वैश्विक समारोह में हमारे स्टाल पर आप सादर आमन्त्रित हैं।

आध्यात्मिक	■ स्वामी विशुद्धानन्द ■ पं० गोपीनाथ कविराज ■ भार्गव शिवरामकिंकर योगत्रयानन्द ■ करपात्रीजी ■ स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती ■ श्यामाचरण लाहिड़ी ■ स्वामी कृष्णानन्दजी 'महाराज' ■ रमण महर्षि ■ संत तुकाराम ■ बाबा नीब करौरी ■ योगिराज तैलंग स्वामी ■ देवराहा बाबा ■ संत कीनाराम ■ संत रैदास ■ संत रज्जब ■ बाबा हैड़ाखान ■ भूपेन्द्रनाथ सान्याल **तथा** *अन्य.....*
इतिहास, कला और संस्कृति ग्रन्थ	■ प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर ■ डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ■ डॉ० लल्लनजी गोपाल ■ जेम्स प्रिंसेप ■ डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त ■ डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल ■ डॉ० मारुतिनन्दनप्रसाद तिवारी ■ डॉ० मोतीचन्द्र ■ पं० बलदेव उपाध्याय ■ प्रो० राजबली पाण्डेय ■ हृदयनारायण दीक्षित ■ डॉ० डेविड फ्राली ■ डॉ० काशी प्रसाद जायसवाल ■ श्रीराम गोयल ■ प्रो० ए०के० नारायण **तथा** *अन्य..*
शिक्षा तथा मनोविज्ञान	■ डॉ० के०पी० पाण्डेय ■ आर०आर० रस्क ■ इन्द्रा ग्रोवर ■ डॉ० प्रवीणचन्द्र श्रीवास्तव **तथा** *अन्य.....*
साहित्य-समीक्षा ग्रन्थ	■ डॉ० भगीरथ मिश्र ■ डॉ० रामचन्द्र तिवारी ■ डॉ० बच्चन सिंह ■ डॉ० शुकदेव सिंह ■ प्रो० कल्याणमल लोढ़ा ■ प्रो० त्रिभुवन सिंह ■ डॉ० कन्हैया सिंह ■ डॉ० कुसुम राय ■ प्रो० वशिष्ठ अनूप **तथा** *अन्य.....*
कथा-कहानी-नाटक संस्मरण साहित्य आदि	■ प्रेमचंद ■ प्रसाद ■ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ■ अनन्त गोपाल शेवड़े ■ भानुशंकर मेहता ■ डॉ० लक्ष्मीधर मालवीय ■ पं० ब्रजमोहन व्यास ■ द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' ■ बिमल मित्र ■ बच्चन सिंह ■ विवेकी राय ■ युगेश्वर ■ कुबेरनाथ राय ■ कान्तिकुमार जैन ■ बाबूराम त्रिपाठी ■ नीहारिका **तथा** *अन्य.....*
संस्कृत साहित्य	■ डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ■ डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी ■ पं० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल ■ पं० बलदेव उपाध्याय ■ डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी ■ प्रो० राजेन्द्र मिश्र ■ प्रो० वी० राघवन् ■ डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी ■ डॉ० दशरथ द्विवेदी ■ डॉ० भोलाशंकर व्यास ■ विश्वंभरनाथ त्रिपाठी **तथा** *अन्य.....*
अन्य विषय	■ समाजशात्र, धर्म तथा दर्शन ■ पत्रकारिता ■ सङ्गीत ■ भाषण तथा संवाद विज्ञान ■ व्याकरण, भाषा और कोश ■ लोक-साहित्य/भोजपुरी साहित्य ■ संत-साहित्य ■ कबीर-साहित्य ■ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य-समीक्षा ■ प्रेमचंद-साहित्य ■ प्रसाद-साहित्य ■ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ■ उपन्यास ■ कहानी ■ कविता ■ नाटक, एकांकी ■ हास्य-व्यंग्य ■ संस्मरण, जीवनचरित यात्रा तथा डायरी ■ मनीषी, संत महात्मा ■ अध्यात्म, योग, तंत्र, साहित्य/जीवन दर्शन ■ योग, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व ■ ज्योतिष ■ बाल साहित्य ■ स्त्री विमर्श ■ दलित साहित्य आदि।

सामान्य पाठकों, छात्रों, अध्येताओं, शोधार्थियों, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं, स्कूल-कॉलेज, विश्वविद्यालय, सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं सरकारी/गैर सरकारी संस्थाओं आदि के सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान हेतु

¥Ù·¤Ù·¤ çßáØ¤ ·¤ â¤Í ¥¤Â·¤è âß¤ × âÎß ÌˆÂÚ

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

विशालाक्षी भवन, चौक (चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में), वाराणसी - 221001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082 ● E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com ● Website : www.vvpbooks.com

Variety of Books by Variety of renowned Authors Published by Variety of renowned Publishers under one roof

विश्वविद्यालय प्रकाशन की विशेष प्रस्तुति

हिन्दी कथा–साहित्य की 'प्रेम–परक शैली' के सबसे बड़े कथा–शिल्पी, प्रख्यात कथाकार

द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' की सम्पूर्ण रचनाओं का अनूठा संग्रह...

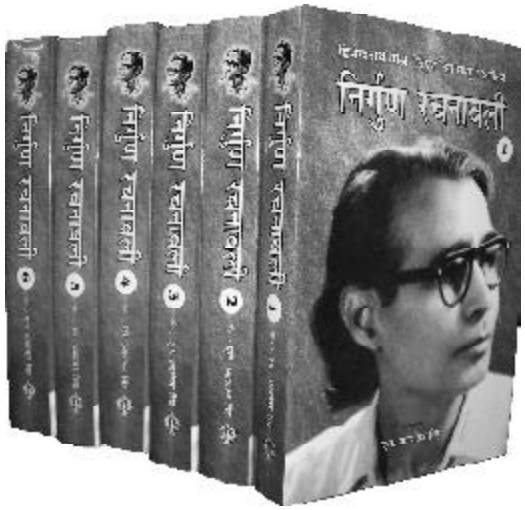

निर्गुण रचनावली

(छः खण्डों में)

×ËØ

âçÁËÎ Ñ L¤0 x®®®/-×ä˜ä, ¥çÁËÎ Ñ L¤0 v}®®/-×ä˜ä

खण्ड–1 : **उपन्यास तथा कहानियाँ,** खण्ड–2 : **कहानियाँ,** खण्ड–3 : **कहानियाँ,** खण्ड–4 : **कहानियाँ,** खण्ड–5 : **कहानियाँ,** खण्ड–6 : **कविताएँ / गीत / लेख /संस्मरण / साक्षात्कार / पत्र / चित्र व परिशिष्ट**

- शुरुआती दौर में निर्गुण की दुःखान्त कहानियों को पढ़कर पाठक अन्दर से तिल–मिलाकर रह जाते थे। नीलकण्ठ तो एक शिव ही थे पर उस आदर्श की ओर उन्मुख होने वालों में निर्गुण अग्रणी हैं। उनकी कहानियाँ कला की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं।
  —आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- जो अकिंचनता की सीमा तक शालीन, उदात्त है, जिसका प्यार, स्नेह करुणा में सराबोर है, जिसकी कुण्ठा अपनी निजी है, जो आडम्बरहीन संकोची, प्रदर्शन से दूर और दम्भहीन है उसी का नाम द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' है।
  निर्गुणजी की रचनाएँ पढ़ते समय हमें शरत् और प्रेमचंद की एक साथ याद आती है। **—विष्णु प्रभाकर**
- जब तक हिन्दी में निर्गुणजी जैसे कहानीकार कहानी लिख रहे हैं, यह नहीं कहा जा सकता कि प्रेमचंद के बाद हिन्दी में उच्चकोटि की कहानी का लिखना बन्द हो गया। इनको हम किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के कहानीकार के समक्ष रख सकते हैं। निर्गुण जैसे कलाकार के होते हुए अन्य भाषाओं के कहानीकारों की ओर हमें दौड़ने की क्या जरूरत है ?
  —रामधारी सिंह 'दिनकर'
- निर्गुण की कहानियों में पात्रों का चित्रण हृदयग्राही है और इतनी सुन्दरता से किया गया है कि इन कहानियों में मनोरंजन के साथ–साथ सद्शिक्षा भी मिलती है। मर्मस्पर्शी विषयों का निरूपण निर्गुण की क्षमता से परिचय कराता है।
  —अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
- निर्गुण की मनोवैज्ञानिक सूझ काबिले–तारीफ़ है और स्त्री पात्रों का चित्रण गुदगुदी पैदा करने वाला है। ग्रामीण जीवन का चित्र बहुत प्रभावशाली ढंग से खींचा है। **—बनारसीदास चतुर्वेदी**
- मध्यम वर्ग के दायरे में अत्यन्त सामान्य आदमी को लेकर जिस निर्ब्याज ढंग से निर्गुण ने अपनी कहानियों का ताना–बाना बुना है वह अद्वितीय है और निर्गुण की कहानियों का स्थान हिन्दी साहित्य में उसने सुरक्षित कर दिया है। **—डॉ० विद्यानिवास मिश्र**
- वे उस पुरानी परिपाटी के कथाकार हैं जिनमें चमत्कार कम पर वास्तविक सत्य अधिक होता है। उनका जीवन का अनुभव बड़ा है, इसलिए उनकी कहानियों में वैचित्र्य और विभिन्नता है, रस है, बल है। **—श्रीपत राय**
- निर्गुण ने केवल कथा की गीली मिट्टी को कुशल करों का स्पर्श दिया। **—गोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव**

सम्मान-पुरस्कार

बीकानेर में सम्मान

बीकानेर, राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास (भारत) द्वारा बीकानेर के साहित्यकार अशफाक कादरी को 'लघुकथा भूषण' अलंकरण सम्मान 2011 तथा साहित्यकार त्रिलोक सिंह ठकुरेला को 'बाल साहित्य भूषण' सम्मान प्रदान किया गया। न्यास द्वारा आगरा में में आयोजित 19वें अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में मुख्य अतिथि डॉ० रत्नाकर पाण्डेय, विशिष्ट अतिथि डॉ० रामावतार शर्मा, साहित्यकार डॉ० राजकुमार सचान ने अंग वस्त्र, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न और साहित्यिक उपहार प्रदान कर यह सम्मान किया।

श्री विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद' सम्मानित

पिछले दिनों लखनऊ में, बाल कल्याण संस्थान द्वारा आयोजित इण्डो नेपाल महिला साहित्यकार सम्मेलन-2011 के शुभ अवसर पर महाकवि श्री विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद', आई०ए०एस० (से०नि०) को बाल साहित्य के प्रति उनकी प्रतिबद्ध सेवाओं को दृष्टिगत रखते हुए बाल कल्याण संस्थान, खटीमा जनपद ऊधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड) द्वारा ग्यारह हजार एक रुपये की सम्मान राशि के साथ 'कमल रस्तोगी समग्र बाल साहित्य शिरोमणि' सम्मान से सम्मानित किया गया।

श्री श्रीकृष्ण शर्मा को विद्यावाचस्पति

विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, ईशीपुर, भागलपुर ने उज्जैन में हाल ही में आयोजित अपने 16वें अधिवेशन में जयपुर (राजस्थान) के प्रख्यात साहित्यकार श्री श्रीकृष्ण शर्मा और सुश्री आकांक्षा यादव को विद्यावाचस्पति की उपाधि से अलंकृत किया। 102 वर्षीय मौनी बाबा के सान्निध्य में विद्यापीठ के कुलपति डॉ० तेजनारायण कुशवाहा ने श्री श्रीकृष्ण शर्मा को उपाधि पत्र, कुलसचिव डॉ० देवेन्द्रनाथ साह ने पदक एवं डॉ० अमरसिंह वधान ने प्रतीक चिह्न प्रदान किया।

प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र पुरस्कृत

विगत दिनों कुञ्जुन्नी रिसर्च एकेडेमी, त्रिचूर (केरल) द्वारा राजप्रभा सम्मान (रु० 21,000/-) एवं साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा संस्कृत बाल साहित्य पुरस्कार (रु० 51,000/-) से सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र को सम्मानित किया गया। आपने अनेकानेक महत्त्वपूर्ण एवं मौलिक ग्रन्थों की रचना कर संस्कृत भाषा एवं साहित्य की समृद्धि एवं प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान दिया है। वर्तमान में भी अनवरत स्वाध्याय एवं रचनाकर्म में संलग्न हैं।

संगीत नाटक अकादमी (दिल्ली) रत्न

प्रतिष्ठित कलाकारों को संगीत नाटक अकादमी द्वारा वर्ष 2011 के लिए अकादमी रत्न (फैलो) सम्मान देने की घोषणा की गयी है। 36 कलाकारों का चयन अकादमी पुरस्कार के लिए किया गया है। संतूर वादक शिव कुमार शर्मा, बांसुरी वादक हरिप्रसाद चौरसिया, सरोद वादक अमजद अली खान, मुकुंद लाठ, उमाइलापुरम शिवरमण, एम चंद्रशेखरन, आर०के० सिंहाजीत सिंह, कलामंडलम गोपी, पद्म सुब्रमण्यम, चंद्रशेखर कंबारंद और एच० कान्हाईलाल को अकादमी रत्न प्रदान किया जायेगा।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र पुरस्कार

स्तम्भ लेखक और टेलीविजन पत्रकार डॉ० शिवकुमार राय को शास्त्री भवन, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में वर्ष 2010 के लिए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। डॉ० राय की पुस्तक 'मेरी जाति भारत' की पाण्डुलिपि को राष्ट्रीय एकता वर्ग में प्रथम पुरस्कार दिया गया है।

'गार्जियन फर्स्ट बुक' पुरस्कार

लंदन। भारतीय मूल के अमेरिकी चिकित्सक और पुलित्जर विजेता सिद्धार्थ मुखर्जी को साहित्य का एक अन्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। उन्हें कैंसर पर लिखी किताब 'द एम्परर ऑफ ऑल मेलडीज : अ बायोग्राफी ऑफ कैंसर' के लिए गार्जियन फर्स्ट बुक अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

दिल्ली में जन्मे मुखर्जी कोलंबिया यूनिवर्सिटी में चिकित्सा विज्ञान के सहायक प्रोफेसर होने के साथ ही विश्वविद्यालय के चिकित्सा केन्द्र में कैंसर के चिकित्सक हैं। इस पुस्तक में डॉ० मुखर्जी ने सदियों पहले कैंसर की स्थिति के बारे में प्रकाश डाला है। उन्होंने इस बीमारी के ऐतिहासिक परिदृश्य को आज के दौर के साथ समेटने की कोशिश की है। यह पुस्तक भविष्य में कैंसर के इलाज की आकर्षक झलक प्रस्तुत करती है।

कुमुद शर्मा को भारतेन्दु हरिश्चंद्र पुरस्कार

हिन्दी की चर्चित आलोचक व लेखिका डॉ० कुमुद शर्मा को केन्द्रीय सूचना व प्रसारण मंत्रालय ने विगत 28 दिसम्बर को पत्रकारिता के क्षेत्र में विशिष्ट लेखन कार्य के लिए 'भारतेन्दु हरिश्चंद्र पुरस्कार' से सम्मानित किया। अखिल भारतीय स्तर पर दूसरी बार यह सम्मान हासिल करने वाली कुमुद शर्मा को यह पुरस्कार उनकी नई पुस्तक 'समाचार बाजार की नैतिकता' के लिए प्रदान किया गया है।

सुश्री आकांक्षा पारे काशिव सम्मानित

दिल्ली के गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान में आयोजित समारोह में प्रख्यात लेखिका श्रीमती मन्नू भण्डारी ने युवा लेखिका सुश्री आकांक्षा पारे काशिव को उनकी कहानी 'तीन सहेलियाँ तीन प्रेमी' हेतु 'रमाकांत स्मृति कहानी पुरस्कार' से सम्मानित किया। पुरस्कार-स्वरूप प्रशस्ति-पत्र, शॉल और नकद राशि भेंट की गई।

युवा साहित्यकार सम्मानित

दिल्ली में 27वें राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन में केन्द्रीय मंत्री श्री फारुख अब्दुल्ला ने युवा कवयित्री, साहित्यकार एवं चर्चित ब्लॉगर सुश्री आकांक्षा यादव और साहित्य साधना एवं समाज-सेवा हेतु श्रीरामशिव मूर्ति यादव को डॉ० अम्बेडकर फैलोशिप राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया।

गोविंद माथुर को आचार्य निरंजननाथ सम्मान

पिछले दिनों उदयपुर में आचार्य निरंजननाथ स्मृति सेवा संस्थान और साहित्य त्रैमासिकी 'संबोधन' के संयुक्त तत्त्वावधान में आचार्य निरंजननाथ सम्मान सुपरिचित कवि गोविंद माथुर को उनकी काव्यकृति 'बची हुई हँसी' के लिए प्रदान किया गया। सम्मान में इकतीस हजार रुपए, श्रीफल, स्मृति-चिह्न तथा प्रशस्ति-पत्र कवि को भेंट किये गये। इस बार से नवोदित रचनाकारों के लिए भी एक सम्मान दिया गया, जिसके लिए 'रिश्तों की बगिया' को चुना गया।

साहित्य अकादमी पुरस्कार

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथाकार डॉ० काशीनाथ सिंह तथा विख्यात इतिहासकार रामचंद्र गुहा सहित 22 लेखकों को इस वर्ष का साहित्य अकादमी का पुरस्कार दिये जाने की घोषणा विगत 21 दिसम्बर को की गयी। डॉ० काशीनाथ सिंह को उनके चर्चित उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' तथा रामचंद्र गुहा को अंग्रेजी में लिखी उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'इण्डिया आफ्टर गाँधी' के लिए पुरस्कृत किया जायेगा।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष सुनील गंगोपाध्याय की अध्यक्षता में कार्यकारी मण्डल की सम्पन्न बैठक में विभिन्न भाषाओं के निर्णायक मण्डलों द्वारा चुनी गयी 22 पुस्तकों को पुरस्कार के लिए अनुमोदित किया गया। मैथिली भाषा के लिए पुरस्कार घोषित किया जाना शेष है जबकि नेपाली के लिए कोई पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। हिन्दी की चयन समिति में इस वर्ष शामिल थे—अरुण कमल, मृदुला गर्ग तथा लीलाधर जगूड़ी। पुरस्कार 1 जनवरी, 2007 से 31 दिसम्बर, 2011 के बीच पहली बार प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया है। पुरस्कारस्वरूप एक उत्कीर्ण ताम्रफलक, शॉल और एक लाख रुपये की राशि दी जाती है। पुरस्कार 14 फरवरी, 2012 को नई दिल्ली में आयोजित एक विशेष समारोह में दिये जायेंगे। पुरस्कार प्राप्त करने वालों की सम्पूर्ण सूची इस प्रकार है—हिन्दी के लिए काशीनाथ सिंह के उपन्यास 'रेहन पर रग्घू',

कन्नड़ के लिए गोपालकृष्ण पै के उपन्यास 'स्वप्न सारस्वत', मणिपुरी के लिए क्षेत्री बीर के उपन्यास 'नंगबु डगाईबडा', ओड़िया के लिए कल्पनाकुमारी देवी के उपन्यास 'अचिह्न बासभूमि', पंजाबी के लिए बलदेव सिंह के उपन्यास 'ढावां दिल्ली दे किंगरे...', राजस्थानी के लिए अतुल कनक के उपन्यास 'जून-जातरा', तमिल के लिए एस० वेंकटेशन के उपन्यास 'कवल कोट्टम', असमिया के लिए स्व० कबीन फुकन के कविता-संग्रह 'एई अनुरागी एई उदास', बांग्ला के लिए मनीन्द्र गुप्त के कविता-संग्रह 'बने आज कनचेर्टो', बोडो के लिए प्रेमानंद मोसाहारि के कविता-संग्रह 'अखाफोरनि दैमा', कश्मीरी के लिए नसीम शफाई के कविता-संग्रह 'न छाय न अक्स', कोंकणी के लिए मेल्विन रोड्रीगस के कविता-संग्रह 'प्रकृतिचो पास', संस्कृत के लिए हरेकृष्ण शतपथी के महाकाव्य 'भारतायनम्', संताली के लिए आदित्य कुमार मांडी के कविता-संग्रह 'बंचाओ लरहाई', उर्दू के लिए खलील मामून के कविता-संग्रह 'आफ़ाक़ की तरफ़।' डोगरी के लिए ललित मंगोत्रा के निबन्ध 'चेतें दियां गलियां', मराठी के लिए ग्रेस (मणिक गोडघाटे) के निबन्ध-संग्रह 'वार्याने हलते रान', तेलुगु के लिए शामला सदाशिव के निबन्ध-संग्रह 'स्वरालयालु', अंग्रेजी के लिए रामचंद्र गुहा के विवरणात्मक इतिहास 'इंडिया आफ्टर गाँधी', गुजराती के लिए मोहन परमार के कहानी-संग्रह 'अंचलो', मलयालम के लिए एम०के० सानू की जीवनी 'बशीर : एकांत वीथियिले अवधूतन', सिंधी के लिए मोहन गेहानी के नाटक '....ता ख्वाबां जो छा तिंडो'।

अलीगढ़ में 'साहित्यश्री' सम्मान

स्व० डॉ० राकेश गुप्त द्वारा अपनी पत्नी तारावती गुप्त की स्मृति में स्थापित 'साहित्यश्री' सम्मान इस वर्ष कवि एवं आलोचक डॉ० अशोक शर्मा को प्रदान किया गया है। ज्ञात हो कि एक दशक पूर्व स्थापित यह पुरस्कार अब तक डॉ० ऋषिकुमार चतुर्वेदी, डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ, डॉ० नमिता सिंह तथा अशोक 'अंजुम' आदि को उनके महत्त्वपूर्ण साहित्यिक अवदान के लिए प्रदान किया जा चुका है।

अध्यक्षता आचार्य श्रीनिवास मिश्र ने की और डॉ० शान्तिस्वरूप गुप्त, पूर्वकुलपति आगरा विश्वविद्यालय ने उन्हें सम्मान-पत्र समर्पित किया। अभयकुमार गुप्त ने सम्मान राशि (दस हजार रुपए) और स्मृति-चिह्न देकर डॉ० अशोक कुमार शर्मा को सम्मानित किया।

मीनाक्षी स्वामी को पुरस्कार

हिन्दी की सुपरिचित रचनाकार मीनाक्षी स्वामी को स्त्री समस्याओं से जुड़े कानूनी पहलुओं पर केन्द्रित उनके उपन्यास 'भूभल' के लिए अखिल भारतीय विद्वत् परिषद, वाराणसी द्वारा कादंबरी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। पिछले दिनों वाराणसी में आयोजित एक समारोह में पुरस्कारस्वरूप उन्हें आरिफ मोहम्मद खान, सुभाष कश्यप, जयप्रकाश द्विवेदी एवं संस्था के अध्यक्ष जयशंकर त्रिपाठी द्वारा ग्यारह हजार रुपये, वाग्देवी प्रतिमा, प्रशस्ति-पत्र, शॉल, श्रीफल प्रदान किये गये।

डॉ० बाछोतिया को साहित्य सम्मान

राजधानी की सृजनात्मक सांस्कृतिक कला संस्था चित्र-कला-संगम द्वारा लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ० हीरालाल बाछोतिया को (2009-10 के लिए) साहित्य सम्मान (प्रशस्ति-पत्र तथा रु० 21,000) प्रदान किया गया। डॉ० बाछोतिया को इससे पूर्व हिन्दी अकादमी, दिल्ली के साहित्यकार सम्मान सहित अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

अलखनंदन को स्पंदन रंगमंच पुरस्कार

ललित कलाओं के लिए समर्पित स्पंदन संस्थान, भोपाल की ओर से स्थापित पुरस्कारों की शृंखला में 'स्पंदन रंगमंच' पुरस्कार 2011 (श्रेष्ठ निर्देशन के लिए) प्रख्यात रंगकर्मी, निर्देशक एवं लेखक श्री अलखनंदन को भोपाल (भारत भवन) में आयोजित सम्मान समारोह में दिया जायेगा। पुरस्कारस्वरूप ग्यारह हजार रुपये की राशि, श्रीफल, शॉल तथा स्मृति चिह्न दिये जायेंगे।

पं० दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान

पं० दीनदयाल जयन्ती के अवसर पर भोपाल के रविन्द्र भवन में एक भव्य समारोह में विख्यात साहित्यकार और राष्ट्रवादी चिंतक डॉ० देवेन्द्र दीपक को पं० दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान 2011 से सम्मानित किया गया। सम्मान में शॉल, श्रीफल, मानपत्र के साथ 11,000/- की राशि भेंट की गयी। इस अवसर पर स्वदेश पत्र समूह के सम्पादक श्री प्रमोद भारद्वाज को 'पत्रकार सम्मान-2011' से सम्मानित किया गया।

रमेश यादव को राज्य साहित्य का पुरस्कार

महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी व सांस्कृतिक विभाग द्वारा दिया जाने वाला बाल साहित्य का सोहनलाल द्विवेदी सम्मान साल 2009-2010 के लिए लेखक-पत्रकार रमेश यादव के बालकविता संग्रह 'महक फूल-सा मुस्काता चल' को प्रदान किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह राज्य के सांस्कृतिक मंत्री श्री संजय देवतले की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

उपन्यास 'पार्वती परिकथा' का लोकार्पण

प्रसिद्ध उपन्यासकार डॉ० भगवतीशरण मिश्र ने पटना में सुप्रसिद्ध लेखक डॉ० अमरनाथ सिन्हा के उपन्यास 'पार्वती परिकथा' का लोकार्पण करते हुए कहा, '' 'पार्वती परिकथा' दाम्पत्य-प्रेम की महागाथा है। हिन्दी में दाम्पत्य प्रेम पर वृहत्काय उपन्यास कम लिखे गये हैं। 'पार्वती परिकथा' अद्भुत उपन्यास है, जिसमें प्रेम अशरीरी होकर भी कायिक प्रेमाख्यान की रसानुभूति कराता है।'' समारोह का आयोजन साहित्यिक पत्रिका 'नई धारा' ने किया, जिसकी अध्यक्षता बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के निदेशक प्रो० रामबुझावन सिंह ने की।

अखिल भारतीय साहित्य-कला-मंच का रजत-जयंती-समारोह

अखिल भारतीय साहित्य-कला-मंच, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित वार्षिक सम्मान समारोह में हिन्दी-साहित्य के क्षेत्र में विविध उपलब्धियों के लिए चौबीस विभूतियों को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया। इस वर्ष मंच ने अपनी स्थापना के पचीस वर्ष पूरे कर लिये और इसे रजत-जयंती-वर्ष के रूप में मनाया गया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में अध्यक्ष डॉ० रत्नाकर पाण्डेय और मुख्य अतिथि डॉ० चमनलाल सप्रू द्वारा डॉ० शमा परवीन की डी०लिट्० शोधकृति 'बीसवीं शती पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध की हिन्दी-कहानी की शिल्प-संरचना का तुलनात्मक अध्ययन', डॉ० महेशराम आर्य की शोध कृति 'गौतमबुद्ध के चरितकाव्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन', डॉ० मंजू सिंह की शोधकृति 'गीतकार मधुकर गौड़ : व्यक्तित्व और साहित्य' तथा 'उत्तर-प्रदेश के साहित्यकार' का लोकार्पण किया गया। तत्पश्चात् साहित्य-सर्जन हेतु डॉ० आरिफ नज़ीर, अलीगढ़; डॉ० नवीनचंद्र लोहानी, मेरठ; डॉ० बालशौरी रेड्डी, चेन्नै; डॉ० मीना सोनी, झारसुकुड़; डॉ० रत्नाकर पाण्डेय, दिल्ली; डॉ० बलदेव वंशी, फरीदाबाद; डॉ० ओमीश परूथी, सोनीपत; डॉ० मोहन सपरा, जालन्धर; डॉ० कमल किशोर गोयनका, नई दिल्ली; डॉ० विद्याबिन्दु सिंह, लखनऊ; प्रो० चमनलाल सप्रू, जम्मू-कश्मीर; डॉ० टी०जी० प्रभाशंकर 'प्रेमी', बेंगलुरू; डॉ० मिलनरानी जमातिया, त्रिपुरा; सुश्री सीमा देव वर्मा, त्रिपुरा; श्री राजकुमार सचान 'होरी', आजमगढ़; डॉ० दिवाकर दिनेश गौड़, गोधरा; डॉ० ओम जोशी, गुना; श्री एम०पी० 'कमल', गाजियाबाद; श्री शिवशंकर यजुर्वेदी, बरेली; डॉ० राजेन्द्र सोनवणे 'अक्षत', बीड़; डॉ० ज्ञानेश दत्त 'हरित', मेरठ; डॉ० मीना नकवी, मुरादाबाद और श्री मनु स्वामी, मुजफ्फरनगर को सम्मानित/पुरस्कृत किया गया। उन्हें शॉल, प्रतीक-चिह्न, सम्मान-पत्र और नकद राशि प्रदान की गयी।

इस सम्मान-समारोह में सुलभ इंटरनेशनल की ओर से प्रतिवर्ष दिया जाने वाला 'शब्द-साधना-सम्मान' (5,000/-) लखनऊ की डॉ० विद्याबिन्दु सिंह को संस्कृति, साहित्य, शिक्षा एवं ललित-कलाओं के उन्नयन और मानवीय मूल्यों के संवर्द्धन के लिए निरन्तर किये जा रहे उनके सर्जनात्मक कार्यों के लिए प्रदान किया गया।

ßÕâ:§Å Ñ www.vvpbooks.com

डॉ० प्रभात त्रिपाठी को मुक्तिबोध सम्मान

पिछले दिनों रायपुर में महाराष्ट्र मण्डल की ओर से दिया जाने वाला 'गजानन माधव मुक्तिबोध सम्मान' रायगढ़ के वरिष्ठ कवि, आलोचक और उपन्यासकार डॉ० प्रभात त्रिपाठी को मराठी के समादृत कवि सतीश कालसेकर द्वारा प्रदान किया गया। महाराष्ट्र मण्डल ने महान् साहित्यकार गजानन माधव मुक्तिबोध की याद में इस पुरस्कार की स्थापना सन् 2000 में की थी।

डॉ० टी० रविंद्रन पुरस्कृत

विगत दिनों बेंगलुरु में डॉ० टी० रविंद्रन को 'आधुनिक हिन्दी काव्य में दलित वर्ग' समीक्षा शोध प्रबन्ध हेतु हिन्दी साहित्य परिषद् का 'सी०एल० प्रभात शोध समीक्षा पुरस्कार 2010-2011' गुजरात की राज्यपाल डॉ० कमला बेनीवाल द्वारा प्रदान किया गया। पुरस्कार-स्वरूप पुरस्कार राशि व ताम्रपत्र भेंट किया गया।

'राहुल सांकृत्यायन पर्यटन पुरस्कार'

पटना में बिहार के युवा पत्रकार श्री सुबोध कुमार नंदन को उनकी कृति 'बिहार के पर्यटन स्थल और सांस्कृतिक धरोहर' को पर्यटन मंत्रालय द्वारा 'राहुल सांकृत्यायन पर्यटन पुरस्कार योजना (2009-2010)' के अन्तर्गत प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

डॉ० ज्ञानेन्द्र माहेश्वरी सम्मानित

विगत दिनों छत्तीसगढ़ में न्यू ऋतंभरा साहित्यिक मंच-कुम्हारी (दुर्ग) द्वारा वरिष्ठ कवि एवं साहित्याचार्य डॉ० ज्ञानेन्द्र माहेश्वरी को हिन्दी साहित्य में सृजनात्मक-रचनात्मक योगदान एवं काव्य-रचना क्षेत्र में उल्लेखनीय अवदान हेतु 'न्यू ऋतंभरा कबीर सम्मान एवं साहित्य अलंकरण 2011' से सम्मानित किया गया।

काका हाथरसी पुरस्कार समारोह

दिल्ली के हिन्दी भवन में 36वाँ काका हाथरसी पुरस्कार समारोह सम्पन्न हुआ। रायपुर के हास्य-व्यंग्य कवि डॉ० सुरेन्द्र दुबे को केन्द्रीय युवा एवं खेल मंत्री श्री अजय माकन द्वारा शॉल, श्रीफल, अभिनन्दन-पत्र और 'हास्य-रत्न' की उपाधि तथा काका हाथरसी ट्रस्ट की ओर से एक लाख रुपये का चेक प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ० सुरेन्द्र दुबे की पुस्तक 'सवाल-ही-सवाल हैं' तथा डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा सम्पादित 'शोध-दिशा' के काका हाथरसी विशेषांक का लोकार्पण सर्वश्री सुधीश पचौरी, अशोक चक्रधर तथा अशोक गर्ग की उपस्थिति में किया गया।

'प्रेमचंद कथा सम्मान'

दिल्ली के रेल भवन में रेलवे बोर्ड की ओर से श्री अरविंद कुमार वोहरा ने लघुकथाकार श्री संतोष सुपेकर को उनकी कृति 'बंद आँखों का समाज' हेतु 'प्रेमचंद कथा सम्मान' स्वरूप प्रमाण-पत्र एवं 3300 रुपये का चेक भेंट कर सम्मानित किया।

'परिवार पुरस्कार'

दिल्ली में मुंबई स्थित कला, संस्कृति और साहित्य की प्रतिनिधि संस्था 'परिवार' की परिवार पुरस्कार चयन समिति द्वारा काव्य साहित्य में रचनात्मक योगदान हेतु इस वर्ष का 'परिवार पुरस्कार' वरिष्ठ कवि श्री विष्णु खरे को देने की घोषणा की गयी है। पुरस्कार-स्वरूप उन्हें एक लाख रुपये की राशि, शॉल, रजत, श्रीफल और स्मृति-चिह्न दिया जायेगा।

'वूमन ऑफ द ईयर' अवार्ड

विगत दिनों दिल्ली में सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था 'पुष्पा फाउंडेशन' द्वारा बिहार-झारखंड की चर्चित पत्रकार, लेखक श्रीमती सरिता सिंह को 'वूमन ऑफ द ईयर अवार्ड' से सम्मानित किया गया। पुरस्कार-स्वरूप मिली 51 हजार रुपये की राशि उन्होंने जमुआ (झारखंड) के नारी विकास मंच को दान कर दी।

तीन भारतीय 'मैन एशियन' की होड़ में

भारतीय लेखक अमिताभ घोष, राहुल भट्टाचार्य और जान्हवी बरुआ वर्ष 2011 के मैन एशियन साहित्य पुरस्कार की होड़ में शामिल हैं। श्री घोष के उपन्यास *रिवर ऑफ स्मोक,* श्री भट्टाचार्य के *द स्लाइ कम्पनी ऑफ पीपल हू केअर* और जान्हवी बरुआ के *रिबर्थ* को पुरस्कार की होड़ में शामिल किये जाने की घोषणा विगत दिनों लंदन में की गयी।

वर्ष 2007 में शुरू किया गया 30 हजार डालर का यह पुरस्कार किसी एशियाई लेखक के अंग्रेजी में लिखे या अनुवादित उपन्यास को दिया जाता है। विजेता की घोषणा 25 मार्च को हांगकांग में आयोजित कार्यक्रम में की जायेगी। एशिया के 34 देशों के लेखक ही इस पुरस्कार के लिए अपनी दावेदारी पेश कर सकते हैं।

विवेकी राय को रामानंदाचार्य सम्मान

वाराणसी, हिन्दी तथा भोजपुरी साहित्य को नयी दिशा देने वाले गाजीपुर के साहित्यकार विवेकी राय को इस वर्ष का जगद्गुरु रामानंदाचार्य पुरस्कार जगद्गुरु रामानंदाचार्य की 713वीं जयंती के अवसर पर 14 जनवरी से काशी में आयोजित त्रिदिवसीय महोत्सव में प्रदान किया गया। पंचगंगा घाट स्थित श्रीमठ के पीठाधीश्वर स्वामी रामनरेशाचार्य ने सम्मानस्वरूप उन्हें एक लाख रुपये भेंट किये।

लिखे-पढ़े नहीं बल्कि लीपे-पोते हैं डैडी

वाराणसी, अमरनाथ शर्मा उर्फ डैडी शहर के बुद्धिजीवियों के लिए एक ऐसा नाम जिसे साहित्य, संगीत और कला के किसी भी पहलू से जोड़ कर देखा जा सकता है। बनारसी मौज मस्ती के पर्याय ठलुआ क्लब ने उनका विशुद्ध बनारसी अंदाज में मुण्डन (अभिनन्दन) किया। पेशे से चित्रकार डैडी के परिचय में कहा गया जगत डैडी लिखे पढ़े कम हैं। इस मामले में अपने बड़े भाई मनु शर्मा से बहुत पीछे हैं, लेकिन लीपने पोतने (चित्रकारी) में उनका कोई जवाब नहीं!

यह परिचय सुनकर श्रोता ही नहीं बल्कि मंचासीन डैडी भी खुद ठहाके लगा उठे। कार्टूनिस्ट विनय कुल द्वारा लिखे गये अभिनंदन पत्र में डैडी के निजी जीवन की तमाम सुखद विसंगतियों की संगति उनके व्यक्तित्व के साथ बैठाई गयी। पत्र का वाचन जोरदार ठहाकों के बीच हुआ।

'तीसरी आँख' सम्मान

'तीसरी आँख' (त्रैमा० अभिनव प्रयास, अलीगढ़) द्वारा प्रारम्भ की गयी 'पुरस्कार-शृंखला' के अन्तर्गत 'श्रीमती सरस्वती सिंह स्मृति श्रेष्ठ सृजन सम्मान' हेतु ग़ज़लकार श्रीधनसिंह खोबा 'सुधाकर' को उनकी उत्कृष्ट कलावादी ग़ज़ल के लिए चयनित किया गया गया है।

बिहारी पुरस्कार

नई दिल्ली। के०के० बिरला फाउंडेशन की ओर से हर साल एक राजस्थानी साहित्यकार को दिए जाने वाला बिहारी पुरस्कार (21वाँ) वर्ष 2011 के लिए जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में राजस्थानी भाषा विभाग के अध्यक्ष अर्जुनदेव चारण को उनके राजस्थानी काव्य संग्रह 'घर तौ अेक नाम है भरोसै रौ' के लिए प्रदान किया गया है।

इस पुरस्कार में एक प्रशस्ति-पत्र, एक प्रतीक चिह्न और एक लाख रुपये की राशि भेंट की जाती है। चारण से पहले यह प्रतिष्ठित सम्मान डॉ० जयसिंह नीरज, नंद चतुर्वेदी, नंदकिशोर आचार्य, हमीदुल्ला, ऋतुराज विजयदान देथा, प्रभा खेतान, कल्याणमल लोढ़ा, मरुधर मृदुल, अलका सरावगी, नंद भारद्वाज, हेमंत शेष, गिरधर राठी आदि वरिष्ठ साहित्यकारों को दिया जा चुका है।

प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

जमनालाल बजाज पुरस्कार 2012 के लिए प्रविष्टियाँ आमन्त्रित हैं। 3 राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए नामांकन स्वीकृति की अन्तिम तारीख है—15 फरवरी 2012 तथा अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार के लिए तारीख है—31 मार्च 2012। विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें—रजि० कार्यालय : द्वारा बजाज आटो लि० बी 60-61 नारायना इंडस्ट्रियल एरिया फेज 2, नई दिल्ली-110028,

www.jamnalalbajajfoundation.org

संगोष्ठी/लोकार्पण

'जन संचारक घाघ' का लोकार्पण

वाराणसी। विगत दिनों साहित्यिक संघ, वाराणसी के 20वें वार्षिक अधिवशन के मुख्य अतिथि के रूप में विचार व्यक्त करते हुए हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ० शंभुनाथ ने कहा कि कबीर ने काशी में साहित्य की जो मशाल जलाई थी उसे किसी हालत में बुझने नहीं देना है। आज भी देश को काशी से बहुत अपेक्षा है और प्रसन्नता की बात है कि साहित्यिक संघ, वाराणसी तथा उसकी पत्रिका 'सोच विचार' इस दिशा में बहुत मजबूत पहल कर रहा है।

इस अवसर पर डॉ० अजयकुमार चतुर्वेदी की पुस्तक 'जनसंचारक घाघ' का लोकार्पण करते हुए वयोवृद्ध साहित्यकार एवं रंगकर्मी डॉ० भानुशंकर मेहता ने कहा कि घाघ-भड्डुरी भाषा और साहित्य में लोकजीवन के सच्चे प्रतिनिधि हैं।

पुराणों में जीवन के अनमोल सूत्र

विगत दिनों साहित्यिक संघ, वाराणसी द्वारा आयोजित समारोह में साहित्यिक पत्रिका 'सोच विचार' के सम्पादक नरेन्द्रनाथ मिश्र की प्रथम कथाकृति 'प्रासंगिक कहानियाँ' का लोकार्पण करते हुए वयोवृद्ध साहित्यकार एवं नाट्यकर्मी डॉ० भानुशंकर मेहता ने कहा कि पुराणों में जीवन के अनमोल रत्न भरे पड़े हैं जिन्हें खोजने और अपनाने की आज भी बड़ी आवश्यकता है। विविध प्रसंगों में कही गयी पौराणिक कहानियाँ जीवन की जटिलतम परिस्थितियों में किस तरह मार्गनिर्देश कर सकती हैं यह बात 'प्रासंगिक कहानियाँ' में संकलित 70 कहानियों द्वारा प्रमाणित है।

फैज की याद में

वाराणसी। कला संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय व प्रगतिशील लेखक संघ (उत्तर प्रदेश) ने विगत दिनों शायर फैज अहमद फैज को याद किया। राधाकृष्णन सभागार में जन्म शताब्दी समारोह के अन्तर्गत आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो० लुत्फुर्रहमान ने कहा कि फैज की शायरी में प्रेम और संघर्ष गहनतर स्थितियों में दिखाई देता है और इंकलाबी जोश का कारण भी बनता है। अध्यक्षता करते हुए कथाकार प्रो० काशीनाथ सिंह ने 30 वर्ष पहले फैज के दिल्ली में स्वागत की स्मृति व्यक्त की। विषय प्रवर्तन आयोजन सचिव डॉ० आफताब आफाकी ने किया। इसके बाद चले सत्रों में वक्ताओं का कहना था कि फैज विश्वशांति और स्वतंत्रता की माँग अपनी शायरी में बराबर करते हैं। प्रो० अली अहमद फातमी, प्रो० अवधेश कुमार सिंह, प्रो० कुमार पंकज, प्रो० बलिराज पाण्डेय, गीतेश शर्मा, प्रो० नसीम अहमद आदि ने विचार व्यक्त किये।

प्रो० रेवा प्रसाद द्विवेदी का महाकाव्य

वाराणसी, संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान प्रो० रेवा प्रसाद द्विवेदी के महाकाव्य 'स्वातंत्र्यसंभवम' का विमोचन राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के कुलपति प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा नई दिल्ली में किया गया। यह महाकाव्य 6064 पद्यों में भारत का अद्यतन इतिहास प्रस्तुत करता है। इसमें महारानी लक्ष्मीबाई से आरम्भ होकर सितम्बर 2011 ई० में अन्ना हजारे के जन आन्दोलन तक का इतिहास वर्णित है।

स्व० पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी जन्मदिवस समारोह

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्यसमाज, संस्कृत एवं वेद के विद्वान् स्व० पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी का 94वाँ जन्मदिवस समारोह मनाया गया। विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में संस्कृत के 5 मूर्धन्य विद्वानों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए स्वामी ब्रह्मस्वरूपानन्द (वेस्टइंडीज) ने कहा कि डॉ० द्विवेदी मन्त्रद्रष्टा ऋषि थे। उन्होंने वेद के अर्थों को समझकर आत्मसात कर रखा था। आज उनके ग्रन्थ पूरे विश्व में वेदों का सन्देश पहुँचा रहे हैं।

इस अवसर पर गुरुकल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व विजिटिंग प्रोफेसर अमरनाथ पाण्डेय ने कहाकि डॉ० कपिलदेव द्विवेदी सहजता और सौम्यता की प्रतिमूर्ति थे।

इस अवसर पर स्व० पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी स्मृति विश्वभारती सम्मान प्रो० अमरनाथ पाण्डेय, प्रो० शिवजी उपाध्याय, प्रो० हरिदत्त शर्मा और डॉ० रामजी मिश्र को प्रदान किया गया तथा स्व० श्रीमती ओम्शान्ति द्विवेदी स्मृति विश्वभारती पुरस्कार (महिला) डॉ० कमला पाण्डेय को प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रो० विद्याशंकर त्रिपाठी ने किया और धन्यवाद ज्ञापन डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी ने किया।

हरियाणा के साहित्य पर संगोष्ठी

मानव भारती शिक्षा-समिति, हिसार द्वारा हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला के सौजन्य से 'हरियाणा का हिन्दी एवं हरियाणवी साहित्य' विषय पर एक राज्य स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन, हिसार में किया गया, जिसमें सभी वक्ताओं ने, हरियाणवी साहित्य के विकास हेतु, उसके मूल्यांकन पर जोर दिया।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए दूरदर्शन-केन्द्र, हिसार के निदेशक विजय राजदान ने कहा कि हरियाणा की साहित्यिक परम्परा बड़ी पुष्ट और प्राचीन है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में हरियाणा साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ० श्यामसखा 'श्याम' ने कहा कि हिन्दी के साथ हरियाणवी साहित्य का विकास भी आवश्यक है, तभी हरियाणवी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करवाया जा सकता है।

संगोष्ठी में कई विद्वानों ने विचार व्यक्त किये। इस आयोजन क्रम में हरियाणा के साहित्य और साहित्यकारों पर केन्द्रित पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगायी गयी।

अज्ञेय आधुनिक चेतना के साहित्यकार

साहित्य अकादेमी द्वारा जोधपुर में विगत दिनों अज्ञेय जन्मशतवार्षिकी पर एक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए प्रो० केदारनाथ सिंह ने कहा कि अज्ञेय ने पठन-पाठन प्रणाली की जड़ता को दूर करने का प्रयास किया। हिन्दी को नया आयाम देने के लिए वे कटिबद्ध थे। जोधपुर में तुलनात्मक भाषा विभाग प्रारम्भ कर उन्होंने हिन्दी साहित्य को विश्व साहित्य बनाने की कोशिश की। वे साहित्य में आधुनिक चेतना का प्रसार करने वाले विलक्षण साहित्यकार थे।

बीज-भाषण देते हुए नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि अज्ञेय ने समकालीनता को मानव के यथार्थ से सम्मिलित कर एक नूतनता को स्थापित किया। समाज की समस्त समस्याओं के प्रति अज्ञेय अति संवेदनशील हैं।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रसिद्ध कवि/आलोचक और साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि परम्परा, प्रयोग, आधुनिकता, श्लीलता, अश्लीलता आदि सभी मुद्दे आज समकालीन साहित्य के मुख्य विचारणीय बिन्दु हैं, ये अज्ञेय द्वारा ही उठाये गये थे।

अज्ञेय-साहित्य से सम्बद्ध संगोष्ठी-सत्रों में प्रो० रामजी तिवारी, कृष्णदत्त पालीवाल, नंद भारद्वाज, प्रो० राजमणि शर्मा, हेतु भारद्वाज, अरुणेश नीरन आदि विद्वानों ने भाग लिया। अन्त में केदारनाथ सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न कवि सम्मेलन अज्ञेय को ही समर्पित था।

श्रीलाल शुक्ल को व्यंग्यकार के खाते में डालना अनुचित

नई दिल्ली। विगत दिनों प्रख्यात हिन्दी कथाकार श्रीलाल शुक्ल की स्मृति में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित श्रद्धांजलि सभा में लगभग सभी वक्ताओं ने उन्हें केवल व्यंग्यकार के रूप में मान्यता देने पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसा करके हम उनके विशाल और विविधतापूर्ण रचनाकर्म को नजरअन्दाज कर रहे हैं। श्रद्धांजलि सभा में श्रीलाल शुक्ल जी की पुत्रवधु साधना शुक्ल ने अकादेमी को इस आयोजन के लिए तथा उपस्थित सभी लेखकों/पत्रकारों को धन्यवाद दिया।

अकादेमी के उपाध्यक्ष विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने नये लेखकों के प्रति उनकी उदारता को याद करते हुए कई संस्मरण सुनाये। प्रभाकर श्रोत्रिय ने कहा कि उनके जाने से लखनऊ का

साहित्यिक आकाश सूना हो गया है। उन्होंने व्यंग्य में जो प्रबंधाकत्मता और महाकाव्यता पैदा की वह दुर्लभ है। सभा में सर्वश्री विश्वनाथ त्रिपाठी, मंगलेश डबराल, कृष्णदत्त पालीवाल, प्रो० इंद्रनाथ चौधुरी, उद्भ्रांत, गंगाप्रसाद विमल, आदि विद्वानों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

अण्डमान में अज्ञेय पर संगोष्ठी

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में हिन्दी साहित्य कला परिषद, पोर्ट ब्लेयर द्वारा 'अज्ञेय की प्रयोगधर्मिता' विषय पर विगत दिनों एक संगोष्ठी का आयोजन हिन्दी भवन में किया गया। मुख्य अतिथि, प्रोफेसर डॉ० हेमराज मीणा, ने अपने सम्बोधन में कहा कि चिंतन और सृजन के क्षेत्र में अज्ञेय ने अपनी प्रतिभा का मानदण्ड स्थापित किया है। डॉ० रामनिवास साहू ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि आधुनिक हिन्दी साहित्य के अग्रदूत के रूप में अज्ञेय का अवदान जितना बड़ा है उतना ही बड़ा उनका व्यक्तित्व है। एसोसिएट प्रोफेसर अनीता गांगुली ने अज्ञेय की यायावारी वृत्ति का उल्लेख करते हुए कहा कि विदेश प्रवास में भी अज्ञेय भारतीयता को विस्मृत नहीं कर पाते थे।

अण्डमान में मानस पर व्याख्यानमाला

दिसम्बर 2011 के आखिरी सप्ताह में हिन्दी साहित्य कला परिषद, पोर्ट ब्लेयर द्वारा महाकवि गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस पर सप्ताहव्यापी व्याख्यान माला/प्रवचन का आयोजन किया गया। चिन्मय मिशन, पोर्ट ब्लेयर के स्वामी शुद्धानन्द सरस्वती ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि रामचरित मानस एक ऐसा ग्रन्थ है जो व्यक्ति और समाज को जीने का ढंग सिखाता है।

मुख्य भूमि से पधारे मानस हंस श्री विभूति दूबे ने रामचरित मानस में विद्यमान जीवन मूल्यों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि इसमें निहित संदेशों को लोग अपने आचरण और व्यवहार में उतारें तो समाज में किसी प्रकार की कटुता, ईर्ष्या और द्वेष के लिए स्थान नहीं रहेगा।

परिषद के साहित्य सचिव डॉ० व्यास मणि त्रिपाठी ने इस सप्ताहव्यापी व्याख्यानमाला के आयोजन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विश्व-साहित्य में रामचरित मानस की बराबरी करने वाला और कोई ग्रन्थ नहीं है। इसमें जीवन-जगत के सभी पक्ष अपनी-अपनी समस्याओं और समाधानों के साथ प्रस्तुत हैं।

कार्यक्रम के आरम्भ में परिषद के अध्यक्ष श्री आर०पी० सिंह ने स्वागत करते हुए कहा कि रामचरित मानस हमें मनुष्य बनने की प्रेरणा देता है।

इतिहास, परम्परा और आधुनिकता

''विद्वद्वरेण्य पं० विद्यानिवास मिश्र ने लोक को व्यापक अर्थों में सींचा और प्रस्तुत भी किया है। वह जितने विद्वान थे उतने ही सहज, सरल और सम्पूर्ण मनुष्य भी। ऐसा इसलिए संभव हो पाया क्योंकि वह गांव-देहात से जीवनपर्यन्त जुड़े रहे।'' कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल श्री टी०एन० चतुर्वेदी ने विगत 14 जनवरी 2012 को विद्याश्री न्यास द्वारा आयोजित 'इतिहास, परम्परा और आधुनिकता' विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में उक्त विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा पण्डितजी अनेक विषयों के विद्वान थे। वह किसी भी शब्द की तह तक पहुँचने की क्षमता रखते थे। उन्हें शब्द के अर्थ की सूक्ष्मता से व्याख्या करने में महारत हासिल थी। प्रथम सत्र के स्मृति संवाद की अध्यक्षता करते हुए बिहार के पूर्व पुलिस महानिदेशक श्रीरामचंद्र 'खान' ने कहा, 'पण्डित जी को ललित निबन्धकार कह देने मात्र से उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का आकलन नहीं हो पाता। वे भारतीय विद्या के पण्डित थे और उन्होंने भारतीय अवधारणा के मूल तत्त्वों को परिभाषित किया। नवीन गद्य का सृजन किया।' स्मृति संवाद में अनेकानेक विद्वानों ने पण्डितजी की खट्टी-मीठी स्मृतियों को ताजा किया। इस सत्र में निर्मल कुमार को उनकी रचना 'ऋतुराज' के लिए पण्डित विद्यानिवास स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। लोक कवि सम्मान गिरधर करुण को दिया गया। दूसरे सत्र में रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली के प्रो० ओमप्रकाश ने कहा कि वर्तमान युग खण्डन का है। आधुनिकता, इतिहास और परम्परा का खण्डन करती है। भूमण्डलीकरण आधुनिकता को खारिज करता है। अंग्रेजों का मानना था कि भारतीयों को इतिहास बोध नहीं है लिहाजा उन्होंने इतिहास की व्याख्या पत्थरों के आधार पर की और कर्जन ने एएसआई की स्थापना की। कहा, हनन की परम्परा इतिहास और परम्परा दोनों की व्याख्या नहीं कर पायेगी। इस सत्र में बीज भाषण निर्मल कुमार ने दिया। प्रो० चितरंजन मिश्र, अनंत मिश्र, प्रो० श्यामसुन्दर, प्रो० राधेश्याम दूबे ने भी विचार रखे। संचालन अरुणेश नीरन ने किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन 15 जनवरी को चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात पत्रकार श्री अच्युतानंद मिश्र ने कहा, 'अंग्रेजी सरकार ने बड़े योजनापूर्ण ढंग से भारत की कृषि सभ्यता को औद्योगिक सभ्यता में बदलने का प्रयास किया था जिसका परिणाम सबके सामने है। उनकी कोशिश थी कि अंग्रेजी के माध्यम से भारत के बुद्धिजीवी अपनी परम्परा, संस्कृति व भाषा से कट जायें।

पंचम सत्र का अध्यक्षीय उद्बोधन साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित प्रो० काशीनाथ सिंह ने दिया।

संगोष्ठी के अन्तिम सत्र 16 जनवरी को समापन सत्र के अन्तर्गत काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो० पृथ्वीश नाग ने कहा, ''आधुनिकता व परम्परा में आज संतुलन बहुत जरूरी है। विदेश में बेटा रहेगा व बूढ़ी माँ व पिता एक फ्लैट में यहाँ पर जीवन गुजारेंगे तो इसे, आधुनिकता नहीं कह सकते। इसमें सामंजस्य जरूरी है।'' अध्यक्षता करते हुए डॉ० कमलेश दत्त त्रिपाठी ने कहा कि पुनरावृत्ति होने की संभावना ही इतिहास है। जहाँ संशय होगा वहीं पर ज्ञान का बीज अंकुरित होगा। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के डॉ० अवधेश प्रधान ने कहा कि अब पूरा देश गाँव की ओर आशा भरी निगाह से देख रहा है क्योंकि अब नगर में नहीं बल्कि गाँव में ही कुछ नया करने की सम्भावना है। गोष्ठी में प्रो० बलिराज पाण्डेय, डॉ० राजेन्द्र पाण्डेय, डॉ० वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, अमरनाथ अमर सहित कई विद्वानों ने विचार व्यक्त किये। डॉ० उद्यन मिश्र ने धन्यवाद, स्वागत डॉ० दयानिधि मिश्र व संचालन डॉ० प्रकाश उदय पाण्डेय ने किया।

'हिन्दी गीत काव्य' पुस्तक का लोकार्पण

वाराणसी। डॉ० विश्वनाथ प्रसाद के 74वें जन्म दिन पर विगत 25 दिसम्बर को विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी गीत काव्य : समीक्षा व विवेचना' पुस्तक का लोकार्पण हुआ। इस पुस्तक को लोकार्पित करते हुए डॉ० प्रसाद की पत्नी श्रीमती विमला प्रसाद ने कहा कि यह सिर्फ कृति नहीं बल्कि उनकी साधना से उपजी एक कालजयी समीक्षा पुस्तक है।

इस अवसर पर 'डॉ० विश्वनाथ प्रसाद कीर्ति बोध' संस्थान द्वारा भोजूबीर स्थित उनके आवास (डॉ० प्रसाद) पर गोष्ठी आयोजित हुई। गोष्ठी में प्रो० ब्रह्मानन्द, डॉ० विजयबहादुर सिंह, श्री कृष्ण तिवारी, डॉ० जीतेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ० रामसुधार सिंह आदि ने विचार व्यक्त किये।

लोकार्पण समारोह सम्पन्न

विगत दिनों पटना में हिन्दी-भोजपुरी के वरिष्ठ साहित्यकार श्री अशोक कुमार सिन्हा की पुस्तक 'भोजपुरी के लोकावतार : भिखारी ठाकुर' का लोकार्पण हुआ। श्री केदारनाथ सिंह ने भिखारी ठाकुर से सन्दर्भित कई प्रसंग सुनाये।

'लहरों के विरुद्ध' काव्य-संग्रह विमोचित

विगत दिनों अलीगढ़ में डॉ० रामप्रकाश द्वारा रचित काव्य-संग्रह 'लहरों के विरुद्ध' का विमोचन सुप्रसिद्ध गीतकार पद्मभूषण गोपालदास नीरज ने किया।

आचार्य काकासाहेब कालेलकर की जयन्ती

दिल्ली में गाँधी स्मृति व दर्शन समिति तथा गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में आचार्य काकासाहेब कालेलकर की 125वीं जयन्ती वर्ष के समापन के अवसर पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन गाँधी दर्शन के सभागार में किया गया। इस अवसर पर अनेक साहित्यकारों तथा विद्वानों ने काकासाहेब के कृतित्व व व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ

पत्रकार श्री आलोक मेहता ने सुश्री मोहिनी माथुर की जीवनी का विमोचन किया तथा काकासाहेब के व्यक्तित्व पर अपने विचार व्यक्त किये।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

पुडुचेरी में स्त्री विमर्श पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। स्त्री विमर्श पर हिन्दी में 40 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए श्री महेश भारद्वाज को 'श्रेष्ठ प्रकाशन सम्मान' से अलंकृत किया गया। सर्वश्री वे०वै०वी० ललितांबा, विजय लक्ष्मी, मधु धवन, सुधा अरोड़ा, सूर्यबाला एवं गीताश्री सहित 150 हिन्दी सेवियों ने भाग लिया। इस अवसर पर डॉ० मधु धवन की पुस्तक 'आधुनिक नारी लेखन और समकालीन समाज', युवा लेखिका एवं पत्रकार सुश्री गीताश्री की पुस्तक 'औरत की बोली' का लोकार्पण भी किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि पुडुचेरी के उपराज्यपाल डॉ० इकबाल सिंह, पूर्व सांसद डॉ० रत्नाकर पाण्डेय तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्वश्री रामदास, गंगाप्रसाद विमल, सूर्यबाला, प्रदीप शर्मा आदि उपस्थित थे।

लोकार्पण एवं विचार गोष्ठी

साहित्य और सांस्कृतिक संस्था 'दिल्ली संवाद' की ओर से पिछले दिनों साहित्य आकादेमी सभागार, नई दिल्ली में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अध्यक्षता की डॉ० नामवर सिंह ने और मुख्य अतिथि थे डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय। आयोजन में कथाकार हृदयेश की तीन खण्डों में प्रकाशित 'सम्पूर्ण कहानियाँ', रूपसिंह चंदेल की 'साठ कहानियाँ' और 'हिन्दी चेतना' के प्रेम जनमेजय अंक का लोकार्पण किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन की पहल स्वयं करें

'राजभाषा कार्यान्वयन की पहल स्वयं से करनी होगी' यह उद्‌गार गुजरात रिफाइनरी टाउनशिप में नराकास उपक्रम वडोदरा द्वारा आयोजित पश्चिम क्षेत्र के राजभाषा अधिकारियों के सम्मेलन में मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए संसदीय राजभाषा समिति की प्रथम उप समिति के संयोजक राजेन्द्र अग्रवाल ने व्यक्त किए। श्री अग्रवाल ने कहा कि जब चीन, जापान जैसे राष्ट्र अपनी भाषा के माध्यम से ही उन्नति के शिखर पर पहुँच सकते हैं तो हम क्यों नहीं? हममें आत्मसम्मान और आत्मबल की कमी है और जिस दिन यह कमी दूर हो जायेगी, तब हमारा देश भी विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में खड़ा हो जायेगा।

इस अवसर पर डॉ० माणिक मृगेश की कृति 'अनुप्रयुक्त राजभाषा' का लोकार्पण मुख्य अतिथि राजेन्द्र अग्रवाल द्वारा किया गया। अतिथि विशेष राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव डी०के० पाण्डेय ने गुजरात रिफाइनरी राजभाषा सम्मान से नीरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ० संजीव गोयल को सम्मानित किया।

समन्वय : भारतीय भाषा महोत्सव

भारतीय लेखन को दुनिया भर के लेखन के साथ एक मंच पर आना चाहिये, लेकिन सबसे पहले तमाम भारतीय भाषाओं में हो रहे लेखन को एक मंच पर एक साथ लाना जरूरी है। इससे भाषाओं के बीच आदान-प्रदान का रास्ता और सुगम होगा, संवाद की निरन्तरता बनेगी और सांस्कृतिक साझेपन की भावना का विस्तार होगा। इसीलिए 'समन्वय' जैसे मंच की जरूरत महसूस करते हुए इंडिया हैबिटैट सेंटर पहल के लिए आगे बढ़ा है। दिल्ली प्रेस और प्रतिलिपि बुक्स इस पहल के साझीदार हैं।

'समन्वय : आईएचसी भारतीय भाषा महोत्सव' का पहला आयोजन 16-18 दिसम्बर, 2011 के मध्य नयी दिल्ली में इंडिया हैबिटैट सेंटर में सम्पन्न हुआ जिसमें 13 भारतीय भाषाओं के 60 से अधिक लेखक और वक्ता शामिल हुए। लेखकों की सूची में पुरस्कृत और वरिष्ठ लेखकों के साथ युवा नामों को भी प्रमुखता से महत्त्व दिया गया।

लोकार्पण सम्पन्न

विगत दिनों पटना में श्रीमती रेणु कुमारी कुशवाहा की सद्य:प्रकाशित पुस्तक 'गाँधी दर्शन के 5 सूत्र' का लोकार्पण वरिष्ठ पत्रकार श्री कुलदीप नैयर के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ।

अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

पिछले दिनों बेल्जियम के गेंट विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई। प्रो० रमेशचंद्र शर्मा ऋषिकल्प ने विवेच्य विषयों पर प्रकाश डाला। श्री अशोक वाजपेयी ने इन विषयों पर बीज भाषण दिया। विशेष सत्र में विशेष रूप से आमंत्रित भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के अध्यक्ष डॉ० कर्ण सिंह ने 'हिन्दी की नाना छवियाँ' विषय पर व्याख्यान दिया। प्रथम सत्र में 'नयी कविता के सामाजिक परिप्रेक्ष्य' विषय पर सर्वश्री रमेशचंद्र शर्मा ऋषिकल्प, नंदकिशोर आचार्य, ज्योतिष जोशी, ब्रजेन्द्र त्रिपाठी आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। द्वितीय सत्र में 'हिन्दी उपन्यास में भारतीयता की अवधारणा' विषय पर चर्चा की गयी। विशेष सत्र में 'वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी' विषय पर श्री विभूति नारायण राय ने अपने विचार व्यक्त किये। 'नई कविता में भारतीयता' विषय पर श्री विनोद कुमार मंगलम ने अपने विचार रखे। अंत में वक्ताओं ने श्री रमेशचंद्र शर्मा तथा प्रो० इवा डी० क्लार्क के प्रति आभार व्यक्त किया।

'पं० विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यानमाला'

विगत दिनों बड़ागाँव में 'विद्याश्री न्यास' द्वारा 'हिन्दी विभाग, बलदेव पी०जी० कॉलेज' तथा 'हिन्दी विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ' के सहयोग से आयोजित वार्षिक कार्यक्रम 'पं० विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान-माला' में श्री माणिक गोविंद चतुर्वेदी के तीन महत्त्वपूर्ण व्याख्यान हुए। श्री चतुर्वेदी ने 'भारतीय भाषा-चिंतन' विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। दूसरे सत्र में 'भारत की भाषिक एकता' विषय पर विचार व्यक्त किये गये। अध्यक्षता प्रो० श्रद्धानंद एवं प्रो० सत्यदेव त्रिपाठी ने की। दूसरे दिन 'भारतीय साहित्य में एकात्मकता' विषय पर व्याख्यान काशी विद्यापीठ में सम्पन्न हुआ, जिसमें प्रो० चतुर्वेदी एवं डॉ० प्रमोद दुबे ने व्याख्यान दिये। अध्यक्षता प्रो० सुरेन्द्र प्रताप ने की। संचालन डॉ० शिवकुमार मिश्र ने किया तथा डॉ० दयानिधि मिश्र ने आभार व्यक्त किया।

फीजी एवं न्यूजीलैण्ड में परिचर्चा सम्पन्न

विगत दिनों फीजी एवं न्यूजीलैण्ड में भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् एवं 'प्रवासी संसार' पत्रिका के संयुक्त तत्त्वावधान में हिन्दी विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। अध्यक्षता भारत में फीजी के उपायुक्त श्री योगेश जे० कर्ण ने की। मुख्य अतिथि श्री अनवर हलीम तथा विशिष्ट अतिथि डॉ० रत्नाकर पाण्डेय, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री अजय सिंह एवं 'हिन्दी वाणी' की संयोजिका श्रीमती सुनीता नारायण थे। इस अवसर पर फीजी के राष्ट्रकवि पं० जयन्ती प्रसाद मिश्र द्वारा सम्पादित 'व्यक्ति और काव्य' पुस्तक का लोकार्पण भी किया गया। अन्त में सभी अतिथियों को 'प्रवासी संसार हिन्दी सेवा सम्मान' से सम्मानित किया गया।

'हिन्द स्वराज की अंत यात्रा' लोकार्पित

प्रज्ञा संस्थान द्वारा नई दिल्ली के हिन्दी भवन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक श्री अजय कुमार उपाध्याय द्वारा लिखित एवं प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'हिन्द स्वराज की अनंत यात्रा' का लोकार्पण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निवर्तमान सरसंघचालक मान० कुप्० सी० सुदर्शन के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ। वरिष्ठ पत्रकार श्री जवाहर कौल ने अध्यक्षता की व प्रसिद्ध गाँधीवादी विचारक डॉ० रामजीत सिंह मुख्य वक्ता थे।

हिन्दी भाषा भूषण

उज्जैन, देश की प्रतिष्ठित साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था साहित्य मंडल, श्रीनाथद्वारा (राजस्थान) द्वारा विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलानुशासक एवं सुधी समालोचक प्रो० शैलेन्द्रकुमार शर्मा को हिन्दी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान के लिए वर्ष 2011 की 'हिन्दी भाषा भूषण' सम्मानोपाधि से अलंकृत किया गया। उन्हें यह सम्मान श्रीनाथ द्वारा (राजस्थान) में आयोजित समारोह में साहित्य मंडल के अध्यक्ष एवं श्रीनाथजी के बड़े मुखिया श्री नरहरि ठाकर, प्रधानमंत्री श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा एवं मन्दिर मण्डल के मुख्य निष्पादन अधिकारी श्री अजयकुमार शुक्ला द्वारा अर्पित किया गया। सम्मान के अन्तर्गत उन्हें विश्वप्रभु श्रीनाथजी की

ßÕâ§Å Ñ www.vvpbooks.com

हाथ कलम की स्वर्णिम छवि, शॉल, उत्तरीय, स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति-पत्र अर्पित किये गये।

संस्कृत वाङ्मय में राष्ट्रीय चेतना

लखनऊ, 22 जनवरी 2012। ''हिन्दुत्व की चेतना ही राष्ट्रीय चेतना है क्योंकि हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता एक ही है। यह भारतवर्ष देवनिर्मित देश है और इसकी संस्कृति में सबके कल्याण के लिए स्थान है।'' उक्त उद्‌गार भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ के तत्वावधान में संस्कृत वाङ्मय में राष्ट्रीय चेतना विषय पर पं० मदन मोहन मालवीय के 150वीं जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि अवकाश प्राप्त न्यायमूर्ति हरिनाथ तिलहरी ने व्यक्त किये।

भाषा हमारी राष्ट्रीयता की पहचान है

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा को 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में अमृत महोत्सव का कार्यक्रम सर्वोदय आश्रम, धरमपेठ, नागपुर में दिनांक 1 दिसम्बर 2011 को सम्पन्न हुआ।

प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित ने अपने उद्‌घाटन भाषण में कहा कि भारत बहुभाषी देश है, यहाँ 22 मान्यताप्राप्त भाषाएँ और करीब 6011 बोलियाँ बोली जाती हैं। ऐसी विविधता में हिन्दी सम्पर्क भाषा की भूमिका अदा करती है और देशवासियों को एक-दूसरे के करीब लाती है। यह भाषा हमारी राष्ट्रीयता की पहचान है। यदि युवा पीढ़ी को हिन्दी से जोड़ना है तो शिक्षा और तकनीकी क्षेत्र में इसके विकास की अधिक आवश्यकता है।

न्या० चन्द्रशेखर धर्माधिकारी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि भाषा और प्रान्त के नाम पर बँटते समाज पर अफसोस होता है। भाषा को जाति-धर्म से जोड़ने के कारण ही यह हो रहा है। अखिल भारतीयता की स्थापना के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी को अपनाना होगा।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में 'हिन्दी : जनभाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा' विषय पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित ने की। प्रमुख वक्ता के रूप में वरिष्ठ पत्रकार श्री प्रकाश दुबे ने कहा कि हिन्दी भाषा को लेकर जो हीनभावना लोगों में है उसे समाप्त करने की आवश्यकता है। कोलकाता विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० अमरनाथ ने कहा कि हमेशा से भारतीय समाज में दो भाषाएँ प्रचलित रही हैं। एक शासक वर्ग की तो दूसरी शोषित वर्ग की, किन्तु अफसोस की बात है कि भारत के सर्वाधिक भू-भाग में बोली जानेवाली इस भाषा को आज तक उसका अधिकार नहीं मिला।

दूसरे विमर्श सत्र का विषय था 'राष्ट्रभाषा के समक्ष उपस्थित चुनौतियाँ और हिन्दी संस्थाओं की भूमिका' जिसकी अध्यक्षता नवनीत के सम्पादक तथा वरिष्ठ पत्रकार श्री विश्वनाथ सचदेव ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि डेढ़ अरब लोग आज हिन्दी बोल रहे हैं। अपनी भाषा पर, अपनी जीवनशैली पर गर्व करने की आवश्यकता आज इस समाज में पैदा हो रही है।

श्री गिरीश गाँधी ने कहा कि कहीं हिन्दी के नाम पर तो कहीं हिन्दी के विरोध के नाम पर आज भी अपनी राजनीति की रोटियाँ सेकने का काम हमारे राजनेता कर रहे हैं।

साहित्य की व्यावहारिक समीक्षा

साहित्य को प्रेमचंद ने जीवन की आलोचना और मुक्तिबोध ने सभ्यता-समीक्षा कहा था। एक विधा के रूप में समीक्षा जीवन अथवा सभ्यता की इसी आलोचना के मर्म का उद्‌घाटन करती है। इसे पाठक और रचना के बीच पुल बनना चाहिए लेकिन यह कभी-कभी बिचौलिए अथवा पण्डे-पुरोहित की भूमिका भी निभाने लगती है। दुर्भाग्य से आज हिन्दी में कुछ ऐसी ही स्थिति है। इसलिए समीक्षा नामक विधा को फिर से पटरी पर लाकर उसे साहित्य में प्रस्तुत जीवन की आलोचना के उद्‌घाटन में समर्थ बनाने की आवश्यकता है। साहित्यिक समीक्षा के दो अंग हैं—पाठ (Text) और सन्दर्भ (Context)। पाठ का अर्थ है उस रचना के अंतर्निर्हित तत्त्व, जिसे समीक्षा का विषय बनाया गया है। सन्दर्भ का अर्थ है वह परिवेश और परिस्थितियाँ जिनमें रचना स्वरूप ग्रहण करती है। इनमें, रचना के पाठ से घनिष्ठ रूप से जुड़ी रहने वाली समीक्षा को व्यावहारिक समीक्षा (Practical criticism) कहते हैं। इन्हीं प्रश्नों को लेकर पिछले दिनों—हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और साहित्यिक पत्रिका 'साखी' के संयुक्त तत्त्वावधान में तथा 'विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी' के सहयोग से **साहित्य की व्यावहारिक समीक्षा** विषय पर दो दिवसीय (1-2 दिसम्बर 2011) राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी का उद्‌घाटन करते हुए प्रख्यात शिक्षाविद् प्रो० कृष्णकुमार ने कहा कि जो स्थान विज्ञान की शिक्षा में प्रयोग का है वही स्थान साहित्य की शिक्षा में समीक्षा का है। उन्होंने कहा कि आलोचना दरअसल एक सांस्कृतिक कर्म है। समीक्षा कर्म के साथ सबसे जरूरी है पढ़ने की परम्परा। प्रो० कुमार ने पढ़ना-क्रिया को विस्तार से समझाते हुए कहा कि हर कृति जवाबी पोस्ट कार्ड की तरह होती है। हर कृति हमसे जवाब माँगती है, वह जिन्दा होना चाहती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो० रामकीर्ति शुक्ल ने उस समीक्षा पद्धति को जरूरी बताया जो रचना को परम्परा की निरन्तरता में देख-परख सके। कार्यक्रम के आरम्भ में संगोष्ठी के संयोजक प्रो० सदानंद शाही ने कहा कि समीक्षा को सभ्यता समीक्षा और जीवन की आलोचना से जोड़कर एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित करने की जरूरत है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ० कृष्णमोहन ने हिन्दी समीक्षा में मौजूद हवाईपन और मनमाने को दुखद बताया।

अगला सत्र 'व्यावहारिक समीक्षा : परम्परा और चुनौतियाँ' विषय पर था, जिसकी अध्यक्षता प्रो० चन्द्रकला त्रिपाठी ने की। डॉ० आशीष त्रिपाठी, प्रो० अनिल राय, ओम निश्चल आदि विद्वानों ने अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये।

अगले दिन विभिन्न तकनीकी सत्रों में डॉ० विपिन कुमार, डॉ० श्रद्धा सिंह, प्रो० चम्पा सिंह और प्रो० वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी की अध्यक्षता में 30 से 40 प्रतिभागियों ने अपने परचे पढ़े। दूसरे सत्र समीक्षा में ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों की भूमिका पर बातचीत हुई। अध्यक्षीय सम्बोधन में प्रो० कुमार पंकज ने 'राग दरबारी' को 'अलग-अलग वैतरणी' और 'आधा गाँव' के साथ पढ़ने की अनुशंसा की और हिन्दी की व्यावहारिक समीक्षा की कई समस्याओं की ओर इशारा किया। इस क्रम में उन्होंने 'कई चाँद थे सरे आसमाँ' को एक प्रमुख उपन्यास बताया।

समापन सत्र में मुख्य वक्तव्य देते हुए प्रो० अवेधश प्रधान ने कहा कि आलोचक को रचनाकार के साथ सहृदय संवाद करना चाहिए। यह तभी सम्भव है जब वह ईर्ष्या द्वेष से मुक्त हो। केवल छिद्रान्वेषण करने वाला आलोचक न रचना के प्रति ईमानदार रह जाता है, न रचनाकार के प्रति और न ही पाठकों के प्रति। जायसी की समीक्षा में रामचंद्र शुक्ल और निराला की समीक्षा में रामविलास शर्मा ने एक आदर्श खड़ा किया। समापन सत्र में संगोष्ठी में हुए समस्त वक्तव्यों और विचारों का समाहार आयोजन सचिव कृष्णमोहन ने किया। अध्यक्षता प्रो० महेन्द्रनाथ राय ने की, और संचालन प्रो० सदानंद शाही ने किया।

आलोचना की दृष्टि पूर्ण 'तीन हमसफर'

हिन्दी की शीर्षस्थ आलोचक निर्मला जैन की कृति 'कथा समय में तीन हमसफर' के बहाने वैचारिक विमर्श कार्यक्रम हुआ। महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दू विश्वविद्यालय वर्धा में कुलपति व साहित्यकार विभूतिनारायण राय की अध्यक्षता में साहित्य विद्यापीठ की ओर से हबीब तनवीर सभागार में आयोजित विशेष चर्चा में निर्मला जैन, प्रो० गंगाप्रसाद विमल, प्रो०ए० अरविंदाक्षन, डॉ० प्रीति सागर उपस्थित थीं। बनारस से आए प्रो० कुमार पंकज व दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ० रामेश्वर राय बतौर वक्ता के रूप में उपस्थित थे। प्रो० गंगा प्रसाद विमल ने कहा, निर्मला जी ने पुस्तक को मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा और कृष्णा सोबती के रचनाकर्म पर केन्द्रित कर लिखा है। लेखिका ने नई पद्धति से तीनों लेखिकाओं के अलग-अलग स्थापत्य की चर्चा की है।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति विभूतिनारायण राय ने कहा कि आज आलोचना की पठनीय पुस्तकें नहीं आ रही हैं। निर्मला जी ने आलोचना की पठनीय पुस्तक पाठकों को दी है।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

सार संसार : (अप्रैल-जून/11) सम्पादक : अमृत मेहता, जे-3 सी, लाजपत नगर III, नई दिल्ली-110024, मूल्य : 20/- रु०
हिन्दी की यह त्रैमासिक पत्रिका हमेशा ही विदेशी भाषा-साहित्य से हिन्दी पाठकों का साक्षात्कार कराती है। इस अंक में भी आस्ट्रिया, जर्मनी, स्विटज़रलैण्ड आदि के साथ मिस्र और चीन की रचनाएँ शामिल हैं। अंक पठनीय है।

मड़ई (रजत जयंती अंक-2011) **:** सम्पादक : डॉ० कालीचरण यादव, प्रकाशक : संयोजक, रावतनाच महोत्सव समिति बिलासपुर, जूना बिलासपुर, छत्तीसगढ़-495001 मूल्य : नि:शुल्क वितरण हेतु
लोक-साहित्य और लोक-संस्कृति के संकल्पों का निर्वाह करती पत्रिका 'मड़ई' के प्रस्तुत रजत जयंती अंक में विभिन्न लेखकों-विचारकों की रचनएँ, साक्षात्कार, समीक्षा प्रस्तुत हैं। लोक तत्त्व, जीवन, साहित्य, संस्कृति की दृष्टि से उत्तम संकलन है।

सुहाना सफर और ये मौसम हँसी : संकलन : नलिन सराफ, प्रकाशक : शैलेन्द्र प्रशंसक परिवार, मुंबई, वितरक : जीवन प्रभात प्रकाशन, ए०-209, साईं श्रद्धा, वीरा देसाई मार्ग, मुंबई-400058, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 200/-रु०
हिन्दी फिल्मों के सफल गीतकार और कवि शैलेन्द्र की स्मृति में समर्पित यह पुस्तक कवि-जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रसंगों, आत्मीयजनों की स्मृतियों और गीतकार-कवि की अप्रकाशित रचनाओं का एकत्र संकलन है। स्मृति-प्रसंगों में हिन्दी फिल्म-इतिहास की गीत-संगीत-संरचना सम्बन्धी जानकारी भी मिलती है।

आज का भगवान (वचन कविताएँ), **क्षणिकाओं का शतक, जियो और जीने दो**, रचनाकार : जी०आर०के० रेड्डी 'अमर', 7-333/4 माचर्ला रोड, कारेंपूडि-522614, जिला : गुण्टूर-आन्ध्रप्रदेश, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 40/- रु० , 40/- रु०, 50/- रु० क्रमशः
तेलुगू-भाषी स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक श्री जी०आर०के० रेड्डी 'अमर' की स्वयं प्रकाशित ये हिन्दी-रचनाएँ, हिन्दी-भाषा की लोकप्रियता का परिचय देती हैं। इनमें से पहली दो काव्य-रचनाएँ हैं। कवि ने सरल शब्दावली में सुन्दर उद्भावनाएँ प्रस्तुत की हैं। तीसरी पुस्तिका बालोपयोगी लघुकथा संग्रह है जिसकी कहानियाँ बच्चों के साथ बड़ों के लिए भी मनोरंजक एवं अनुप्रेरक हैं।

20वाँ द्विवार्षिक नई दिल्ली

çßàß ÂSÌ ·¤ ×Üæ

(प्रगति मैदान में शनिवार 25 फरवरी से रविवार 4 मार्च 2012, प्रतिदिन प्रातः 11 से रात्रि 8 बजे तक)

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

ãæÜ Ù0................ × SÅæÜ Ù0................ ÂÚ ¥æÂ·¤ SßæªÌ ãñ ©^â·¤ ãÐ

ÖæÚÌèØ ßæ³¾×Ø

मासिक

वर्ष : 13 जनवरी-फरवरी 2012 अंक : 1-2

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक
स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि० वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2012-14 RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. Stock/RNP/vsi E/001/2012-2014

सेवा में,

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082
E-mail : **sales@vvpbooks.com** ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)
विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)